हरिभूमि
रेवाड़ी भूमि
रोहतक, रविवार 11 अक्टूबर 2026

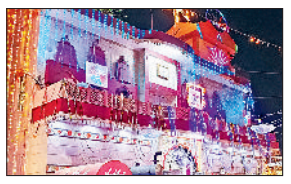
तापमान

अधिकतम 36 .5 डिग्री
न्यूनतम 21.0 डिग्री

9 विद्यार्थियों को नशा मुक्त एवं स्वस्थ जीवन शैली अपनाने का दिया संदेश



10 शारदीय नवरात्रे आज से, जगमग हुए मंदिर



खबर संक्षेप

गोटियों से सट्टा खिलाते हुए एक दबोचा

धारूहेड़ा। सेक्टर-6 थाना पुलिस ने गोटियों से सट्टा खिलाने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस को सूचना मिली थी कि सोहना रोड के पास एक व्यक्ति गोटियों से सट्टा खिला रहा है। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने मौके पर जाकर आरोपी को काबू कर लिया। पूछताछ करने पर उसने अपना नाम गुरूग्राम के डीएलएफ निवासी परवेज बताया। आरोपी के कब्जे से गोटियां व सट्टे के 1060 रुपये बरामद हुए। उसके खिलाफ गैंबलिंग एक्ट के तहत केस दर्ज कर लिया गया।

सुसाइड को मजबूर करने की आरोपी काबू

रेवाड़ी। थाना सदर पुलिस ने आत्महत्या के लिए मजबूर करने के मामले में एक महिला को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आत्महत्या प्रकरण के बाद पीड़ित पक्ष की शिकायत के आधार पर आरोपियों के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया था। गत 17 मार्च को दर्ज किए गए अभियोग की जांच के बाद पुलिस ने इस मामले में यूपी के पारारपुर निवासी संगीता उर्फ सिवानी को गिरफ्तार कर लिया। तफ्तीश में शामिल करने के बाद उसे पुलिस बेल पर छोड़ दिया गया।

दहेज उत्पीड़न मामले में एक गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस ने दहेज की मांग पर विवाहिता को परेशान करने और जान से मारने की धमकी देने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने एक विवाहिता की शिकायत के आधार दोनों पक्षों के बीच राजीनामा कराने के प्रयास किए थे। बार-बार काउंसलिंग के बाद भी उनमें समझौता नहीं हुआ, तो पुलिस ने गत 13 अगस्त को ससुराल पक्ष के लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया था। पुलिस ने जांच के बाद राजस्थान के करावटा निवासी अनमोल सिंह को गिरफ्तार किया है। बाद में उसे पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

पोक्सो एक्ट की आरोपी चढ़ी हत्थे

रेवाड़ी। थाना शहर पुलिस ने नाबालिग के अपहरण और यौन शोषण के मामले में एक महिला आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने पीड़ित पक्ष की शिकायत के आधार पर 18 अगस्त को कई आरोपियों के खिलाफ अपहरण व पोक्सो एक्ट के तहत केस दर्ज किया था। पीड़ित ने नाबालिग का अपहरण करने और उसे यौन शोषण का शिकार बनाने के आरोप लगाए थे। पुलिस ने इस मामले में एक गांव निवासी रोशनी को गिरफ्तार किया है। बाद में उसे कोर्ट में पेश कर दिया गया।

चोरी के मामले में आरोपी भेजा जेल

रेवाड़ी। पुलिस ने बाइक चोरी के मामले गिरफ्तार किए गए आरोपी को जेल भेज दिया। मॉडल टाउन थाना एरिया से बाइक चोरी होने के बाद पुलिस ने 22 सितंबर को केस दर्ज करते हुए जांच शुरू की थी। जांच के बाद पुलिस ने नूंह के लोहिंगा निवासी साबिर को इस मामले में गिरफ्तार किया था। पूछताछ के बाद आरोपी की निशानदेही पर पुलिस ने चोरी की बाइक बरामद कर ली।

पीथड़ावास में आज लगेगा स्वैच्छिक रक्तदान शिविर

रेवाड़ी। मानवता की सेवा, जीवन रक्षा और समाज में रक्तदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से शहीद दशरथ राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पीथड़ावास में आज सुबह 10 बजे से छठे स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। शिविर संयोजक अमृत कुमार ने युवाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं क्षेत्रवासियों से इस पुनीत कार्य में बढ़-चढ़कर भाग लेने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि रक्तदान महादान है, क्योंकि हमारे द्वारा किया गया रक्तदान किसी जरूरतमंद व्यक्ति को नया जीवन देने का माध्यम बन सकता है।

बावल रोड पर रॉन्ग साइड में लगी ट्रैक्टरों की कतार, लोगों को झेलनी पड़ी परेशानी

अनाज मंडी में बाजरे की बंपर आवक शाम तक 800 से अधिक गेट पास काटे

- अनाज मंडी में अब तक 185292 लाख क्विंटल बाजरे की आवक, 4338 गेट पास कट चुके, ई-खरीद पोर्टल पर बाजरे की 121645 लाख क्विंटल आवक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

जिले की रेवाड़ी व कोसली अनाज मंडी में बाजरे की आवक लगातार जोर पकड़ रही है। सरकारी खरीद एजेंसी हैफेड ने अभी तक एक भी दाना नहीं खरीदा है। अनाज मंडियों में व्यापारी ही बाजरा खरीद रहे हैं। रेवाड़ी अनाज मंडी में शुक्रवार तक 4338 गेट पास काटे जा चुके थे और ई-खरीद पोर्टल के माध्यम से 121645 लाख क्विंटल से अधिक बाजरा खरीदागया, जबकि अनाज मंडी में सितंबर से अब तक 185292 लाख क्विंटल बाजरे की आवक हो चुकी है। शनिवार को 5 अक्टूबर से 9 अक्टूबर तक निर्धारित की गई रोस्टर प्रणाली में वंचित रहे गांवों के किसानों का बाजरा खरीदा गया।

शनिवार को भारी मात्रा में बाजरे की आवक होने से अनाज मंडी के बाहर पूरे दिन ट्रैक्टरों से जाम की स्थिति बनी रही। किसानों की संख्या ज्यादा होने के कारण बावल रोड से सचिवालय रोड तक रॉन्ग साइड में ट्रैक्टरों की कतार लगने से जाम की स्थिति बनी रही।



रेवाड़ी। कंटेनर डिपो मार्ग पर जाम में फंसे वाहन। फोटो : हरिभूमि



रेवाड़ी। बाजरे से अटा हुआ अनाज मंडी का फड। फोटो : हरिभूमि

जिओ फेसिंग के बाद किसानों को मिली एंट्री

जिले में इस वर्ष करीब 56 हजार किसानों ने 1 लाख 87 हजार एकड़ भूमि पर बाजरे की फसल का मेरी फसल-मेरा ब्योरा पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन कराया है। किसान ई-खरीद पोर्टल के माध्यम से ही फसल की बिक्री कर सकेंगे। मंडी में बाजरा लेकर आने वाले किसानों के ट्रैक्टर-ट्रॉली की जियो फेंसिंग करके वीडियो अपलोड की जा रही है। जियो फेंसिंग के बाद मेरी फसल पोर्टल पर भी फसल का सत्यापन किया जा रहा है। किसान का बायोमैट्रिक मशीन पर अंगूठा लगवाकर ट्रैक्टर-ट्रॉली को मंडी में प्रवेश दिया जा रहा है।

शाम तक 808 गेटपास काटे गए

शनिवार को देर शाम तक को रेवाड़ी अनाज मंडी में शाम 5 बजे तक ई-खरीद पोर्टल पर 808 गेटपास काटे गए तथा 22 हजार 810 क्विंटल बाजरे की आवक दर्ज की गई। आवक का दबाव अधिक रहने के कारण मंडी के दोनों मुख्य प्रवेश से वाहनों की लंबी कतारें लगी रहीं। मंडी में बाजरा 2100 रुपये से लेकर 2300 रुपये प्रति क्विंटल की दर से खरीदा गया।

शनिवार को यहां बिगड़ी रही व्यवस्था

शनिवार को अल सुबह से ही अनाजमंडी के दोनों मुख्य गेटों पर किसान बाजरा लेकर पहुंच गए। किसानों ने नेहरू पार्क के कट से हाउसिंग बोर्ड मार्ग पर अव्यवस्थित ढंग से ट्रैक्टरों को लगाकर पूरा रोड जाम कर दिया। ट्रैक्टरों की कतार करीब दो किलोमीटर तक लगी रही। पुलिस की ओर से दोपहर तक मशक्कत करने के बाद पुराना हाउसिंग बोर्ड मार्ग को एक तरफा कराया। इसके बाद किसानों ने बावल रोड पर रॉन्ग साइड से सचिवालय रोड होते हुए अनाजमंडी तक ट्रैक्टरों की कतार लगा ली, जिससे अन्य वाहनों का आवागमन बाधित हो गया और शाम तक जाम की स्थिति बनी रही। बीच-बीच में ट्रक व ट्राले भी यातायात को बाधित करते रहे।

पीड़िता और दोषी ऑटो चालक एक ही गांव के रहने वाले हैं

नाबालिग बच्चियों के साथ छेड़छाड़ के दोषी को 3 साल की सजा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

कोसली थाना पुलिस की ओर से की गई उत्कृष्ट पैरवी पर डा. मैनपाल रामावत अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश फास्ट ट्रैक स्पेशल कोर्ट ने नाबालिग बच्चियों के साथ छेड़छाड़ और डराने-धमकाने के मामले में आरोपी ऑटो चालक को दोषी करार देते हुए तीन साल का कठोर कारावास और 5000 जुर्माने की सजा सुनाई है। जुर्माना न भरने की सूरत में दोषी को 1 माह का अतिरिक्त कठोर कारावास भुगतना होगा। पीड़िता और दोषी ऑटो चालक एक ही गांव के रहने वाले हैं।

क्षेत्र के एक गांव के रहने वाले एक व्यक्ति ने अपनी शिकायत में बताया था कि 21 दिसंबर 2025 को उनकी 13 साल की नाबालिग बेटी और उसकी अन्य नाबालिग सहेलियां स्कॉलरशिप टेस्ट देने गुड़ियानी गई थीं। टेस्ट छूटने के बाद उनके गांव का एक आरोपी ऑटो चालक उन्हें घर छोड़ने के बहाने ऑटो में बैठाकर बीएमजी मॉल व अन्य सुनसान जगहों पर ले गया, जहां उसने बच्चियों के साथ छेड़छाड़ की और किसी को बताने पर जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ थाना कोसली में छेड़छाड़ व पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज करके जांच शुरू की थी और आरोपी को गिरफ्तार कर लिया था। जांच के बाद पुलिस ने अदालत में आरोपी ऑटो चालक के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की थी।

मामले की सुनवाई के बाद अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश फास्ट ट्रैक स्पेशल कोर्ट डा. मैनपाल रामावत की अदालत में आरोपी ऑटो चालक को दोषी करार देते हुए 3 साल कैद और 5 हजार रुपये जुर्माने की सजा सुनाई है।



पति सहित तीन ससुरालजनों पर दहेज प्रताड़ना का केस दर्ज

कोसली। कोसली की सुमेर कॉलोनी निवासी व्यक्ति ने अपनी बेटी के पति सहित तीन ससुरालीजनों पर दहेज प्रताड़ना, मारपीट व जान से मारने की धमकी देने के आरोप में कोसली थाने में मामला दर्ज कराया है। बलजीत ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उन्होंने अपनी बेटी का विवाह गत वर्ष अप्रैल माह में रेवाड़ी के शांति नगर निवासी अंकित से किया था। विवाह में अपनी हैसियत के अनुसार काफी दान-दहेज भी दिया, परन्तु उसका पति व सास, ससुर शादी में दिए गए दहेज से नाखुश थे और शादी के तुरंत बाद ही ओर दहेज की नाजायज मांग को लेकर उनकी बेटी को मानसिक रूप से तंग व परेशान करने लगे। इसी वर्ष अप्रैल माह में उनकी बेटी की सास सोनू देवी ने उनकी बेटी से मायके से पांच लाख रुपये लेकर आने का दबाव बनाया। मना करने पर उन्होंने उसके साथ गाली गलोज व मार-पीट करनी शुरू कर दी।

कांग्रेसी नेताओं को घर में ही रखा नजरबंद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

दिल्ली में कांग्रेस गठबंधन के एसआईआर को लेकर आंदोलन को देखते हुए पुलिस व खुफिया विभाग शनिवार को भी पूरी तरह अलर्ट रहे। पुलिस ने प्रमुख कांग्रेसी नेताओं के दिल्ली कूच को रोकने के लिए उन्हें घर में ही नजरबंद रखा। कांग्रेसी नेताओं ने पुलिस की इस कार्रवाई को लोकतांत्रित अधिकारियों का हनन करार दिया है।

कांग्रेस के ग्रामीण जिलाध्यक्ष और एससी सेल के जिलाध्यक्ष रमेश ठेकेदार को गत शुक्रवार ही पुलिस ने हाउस अरेस्ट कर लिया था। उन्हें घर से बाहर निकलने की इजाजत नहीं दी गई। शनिवार को कांग्रेस की पूर्व राष्ट्रीय कोऑर्डिनेटर व विश्व यादव परिषद की प्रवक्ता दीपिका लवली यादव को भी घर पर ही अरेस्ट कर लिया गया। कांग्रेस के सहयोगी दलों के कुछ नेताओं को भी पुलिस ने घर से बाहर नहीं निकलने नहीं दिया। कांग्रेस के दिल्ली जंतर-मंतर पर सीईसी ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे पर प्रस्तावित प्रदर्शन को लेकर पुलिस ने यह कदम उठाए। इसके चलते प्रभावी कांग्रेसी नेता दिल्ली कूच करने में कामयाब नहीं हुए।



रेवाड़ी। हाउस अरेस्ट की गई वरिष्ठ कांग्रेस नेत्री दीपिका लवली।

लोकतांत्रिक अधिकारों का हनन: दीपिका

वरिष्ठ कांग्रेस नेत्री दीपिका लवली ने एक बयान में कहा कि पुलिस कांग्रेसी नेताओं के साथ आतंकवादियों जैसा रुख अपना रही है। आम नागरिक को आवश्यकता पड़ने पर पुलिस समय पर नहीं पहुंच पाती। वह दो दिन से तबियत खराब होने के कारण घर पर ही हैं। इसके बावजूद पुलिस उनके घर से टस से मस नहीं हुई। कांग्रेस पार्टी वोट चोरी के मुद्दे को लेकर शांतिपूर्ण आंदोलन कर रही है, जिसे दबाने के लिए सत्तारूढ भाजपा सरकार अलोकतांत्रिक हथकंडे अपना रही है। कांग्रेस पार्टी सरकार के इस रवैये के खिलाफ अपना आंदोलन तेज करने से पीछे नहीं हटेगी।

हमले में घायल कंपनीकर्मी अस्पताल से लापता, दिनभर चला तलाशी अभियान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

बावल में सेक्टर-2 में रह रहे एक कंपनी कर्मचारी कर शुक्रवार की रात अपने दोस्तों के साथ झगड़ा हुआ, तो एक दोस्त ने उसे दांतों से काटकर घायल कर दिया। ईआरवी ने उसे ट्रॉमा सेंटर पहुंचाया। उपचार के दौरान रात को वह अस्पताल से लापता हो गया। दिन भर पुलिस उसकी तलाश करती रही, लेकिन उसका कोई पता नहीं चल सका।

बावल की एक कंपनी में कार्यरत अनुभव पांडेय रात को अपने दोस्तों के साथ बैठकर शराब का सेवन कर रहा था। इसी दौरान पुलिस कंट्रोल रूम को उस पर हमला किए जाने की सूचना मिली। सूचना मिलते ही पुलिस की ईआरवी मौके पर पहुंच गई। दोस्त ने अभिनव को दांतों से काटकर जख्मी किया हुआ था, जिस कारण पुलिस ने उसे रात को ही अस्पताल में दाखिल करा दिया। डॉक्टरों ने रुक्का भेजकर पुलिस को घटना की सूचना दी। सूचना मिलने के बाद बयान लेने के लिए पुलिस मौके पर पहुंची तो अनुभव बेड से गायब मिला। काफी तलाश करने के बाद भी उसका कोई पता नहीं चला।



रेवाड़ी। सर शादीलाल नागरिक अस्पताल परिसर। फोटो : हरिभूमि

फोन पर भी संपर्क नहीं हो रहा

अस्पताल में उपचाराधीन मरीज के अचानक लापता होने से अस्पताल प्रशासन की सकते में आ गया। बार-बार प्रयास के बाद भी उससे फोन पर संपर्क नहीं हो सका। वह अपने कमरे पर भी नहीं मिला। अब पुलिस उसकी तलाश करने में जुटी हुई है।

अक्टूबर में फिर एक्टिव हुआ डेंगू का डंक

- 50 पर पहुंचा डेंगू मरीजों का आंकड़ा
- फील्ड विजिट के दौरान लार्वा मिलने पर 2510 लोगों को दिए गए नोटिस

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

जिले में डेंगू पॉजिटिव मरीजों का पीक टाइम चल रहा है। डेंगू के दो नए मरीज और मिलने से सीजन में पॉजिटिव मरीजों की संख्या 50 पर पहुंच चुकी है। अक्टूबर माह में अब तक 5 डेंगू के मरीज मिले है, जबकि गत वर्ष 10 अक्टूबर तक 37 डेंगू पॉजिटिव मरीज मिल थे। गत वर्ष के सीजन में अब तक कुल मरीजों की संख्या 254 पर पहुंच गई थी। इस बार स्वास्थ्य विभाग की सतर्कता के कारण डेंगू व मलेरिया की रोकथाम में काफी कंट्रोल है। स्वास्थ्य विभाग की ओर से शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में सोर्स रिडक्शन एक्टिविटी तहत





शहरी क्षेत्र में सबसे ज्यादा 22 मरीज मिले

डिप्टी सीएमओ व मलेरिया नोडल अधिकारी डा. जोगेन्द्र तंवर ने बताया कि जिले में अभी तक 50 डेंगू पॉजिटिव मरीज व 14 मलेरिया केस मिल चुके है। शहर में 22, मीरपुर सीएचसी के अर्न्तगत 10, बावल सीएचसी में 10, गुरावड़ा सीएचसी में 4 तथा खोल सीएचसी में 3 व नाहड़ सीएचसी के अर्न्तगत 1 डेंगू का केस मिल चुका है। सीजन में अब तक बुखार से पीड़ित 317 लोगों के ब्लड सेंपल की स्लाइड तैयार की गई है।

घरों के आसपास साफ सफाई रखे: डा. जोगेन्द्र

डेंगू व मलेरिया बीमारियों से बचाव के लिए घरों के आसपास साफ-सफाई रखे। ठहरे हुए पानी में काला तेल डाले। घरों के बर्तन, कूलर, पानी की टंकी व पशुओं की खेल की सफाई करते रहे, जिससे मच्छर का लार्वा न पनप सकें। डेंगू व मलेरिया के लक्षण होने पर ब्लड की जांच कराकर डॉक्टर की सलाह पर ही दवाईयां ले। ज्यादा से ज्यादा पेय पद्धार्थों का सेवन करें।

-डा. जोगेन्द्र तंवर, जिला मलेरिया अधिकारी।

डेंगू-मलेरिया की रोकथाम के पूरे प्रयास किए जा रहे है। क्षेत्रों में फोगिंग कराई जा रही है, वही ठहरे हुए पानी में काला तेल व टेमीपास की दवा डाली जा रही है। स्वास्थ्य विभाग की टीम फील्ड विजिट के दौरान अब तक 1703541 घरों में लार्वा की जांच की जा चुकी है। वही लार्वा मिलने पर 2510 लोगों को नोटिस दिए जा चुके है।

मंचन कलाकारों की शानदार प्रस्तुति ने दर्शकों को रामायण के प्रसंगों से जोड़ दिया

श्री राम जन्म का मंचन, राजा दशरथ ने पुत्र प्राप्ति के लिए किया यज्ञ

हरिभूमि न्यूज ▶▶| धारूहेड़ा

श्री राम रामलीला क्लब की ओर से रामलीला के दूसरे दिन में भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव से लेकर महर्षि विश्वामित्र के राजा दशरथ के दरबार में आगमन तक के प्रसंगों का मंचन किया गया। कलाकारों की शानदार प्रस्तुति ने दर्शकों को रामायण के प्रसंगों से जोड़ दिया। महाराजा दशरथ को वृद्धावस्था में संतान न होने की चिंता सताने लगती है। वे गुरु वशिष्ठ के पास पहुंचकर पुत्र प्राप्ति का उपाय पूछते हैं। गुरु वशिष्ठ उन्हें श्रृंगी ऋषि से पुत्रेष्टि यज्ञ कराने का परामर्श देते हैं। इसके बाद महाराजा दशरथ पुत्रेष्टि यज्ञ कराते हैं। यज्ञ से प्रसन्न होकर अग्निदेव उन्हें खीर प्रदान करते हैं, जिसे राजा दशरथ अपनी तीनों रानियों में वितरित कर देते हैं। इसके फलस्वरूप माता कौशल्या के गर्भ से भगवान श्रीराम, माता कैकेयी के गर्भ से भरत तथा माता सुमित्रा के गर्भ से लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म होता है। इसके बाद रामलीला में वन क्षेत्र में मारीच और सुबाहु के आतंक तथा उनके द्वारा महर्षि विश्वामित्र के यज्ञ में बाधा डालने का प्रसंग प्रस्तुत किया गया। राक्षसों की ओर से यज्ञ भंग किए जाने से चिंतित महर्षि विश्वामित्र राजा दशरथ के दरबार में पहुंचते हैं और यज्ञ की रक्षा के लिए उनसे भगवान श्रीराम और लक्ष्मण को अपने साथ भेजने का आग्रह करते हैं। महाराजा दशरथ अपने पुत्रों से अत्यधिक स्नेह के कारण पहले संकोच करते हैं, लेकिन गुरु वशिष्ठ के समझाने पर वे राम और लक्ष्मण को महर्षि विश्वामित्र के साथ भेजने के लिए सहमत हो जाते हैं। श्रीराम और लक्ष्मण महर्षि विश्वामित्र के साथ यज्ञ की रक्षा के लिए प्रस्थान करते हैं।



रेवाड़ी। धारूहेड़ा में रामलीला का मंचन करते हुए कलाकार। फोटो : हरिभूमि

रामलीला में ये रहे कलाकार

रामलीला में महाराज दशरथ की भूमिका रमेश सिकरवाल, गुरु वशिष्ठ रत्न चंद सैनी, सुमंत्र दलीप सिकरवाल, विश्वामित्र प्रकाश प्रजापत, मारीच डॉ. सुभाष अग्रवाल, सुबाहु शेर सिंह प्रजापत, कैकेयी अरुण सैन, कौशल्या लक्ष्मण प्रजापत, सुमित्रा प्रकाश प्रजापत सहित लखपत शर्मा, राहुल जोशी, तरुण शौर्या, मुकेश चांगा, लीलाधर सैन, नवल सैनी, राजकुमार शर्मा और डा. अश्विनी शर्मा ने विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन किया।

नवरात्र पर आज निकलेगी ज्योति ज्वाला कलश यात्रा

रेवाड़ी। शारदीय नवरात्रों के शुभारंभ पर 11 अक्टूबर को शहर में भव्य ज्योति ज्वाला कलश यात्रा निकाली जाएगी। इंद्रा कॉलोनी स्थित काली माता कामाख्या दरबार में आयोजित होने वाले धार्मिक कार्यक्रम को लेकर श्रद्धालुओं में उत्साह है। आयोजकों ने बताया कि दिव्य ज्योति ज्वाला जी धाम, हिमाचल प्रदेश से माता की ज्योति लेकर आने वाले बाल योगी कुणाल सारसर, सोनू भगत, बलजीत भगत, काल भैरव उपासक प्रवीण कुमार और समीर की अगुवाई में कलश यात्रा निकाली जाएगी। यात्रा गोकलगढ़ स्थित प्राचीन हनुमान मंदिर से शुरू होकर इंद्रा कॉलोनी स्थित काली माता कामाख्या दरबार तक पहुंचेगी। इस दौरान विभिन्न धार्मिक झांकियां भी शामिल होंगी।

एक पन्ने की वित्तीय योजना से बिखरे पैसे को दें सही दिशा

▶▶ कमाई आते ही तय करें किस हिस्से से खर्च, सुरक्षा, कर्ज और निवेश ▶▶ छोटी लेकिन स्पष्ट योजना लंबे समय में बना सकती है बड़ा कोष ▶▶ बीमा, आपातकालीन निधि, कर्ज और निवेश का तय करें क्रम ▶▶ हर महीने आय आते ही पैसा अपने लक्ष्य के अनुसार ही करें आवंटित

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

कमाई अच्छी होने के बावजूद कई लोगों की आर्थिक स्थिति इसलिए मजबूत नहीं हो पाती, क्योंकि उनका पैसा अलग-अलग जगह बिखरा रहता है। किसी बैंक खाते में कुछ रकम, कहीं बीमा पॉलिसी, क्रेडिट कार्ड का बकाया, किसी म्यूचुअल फंड में छोटी-सी राशि और थोड़ी बचत घर में... लेकिन यह स्पष्ट नहीं होता कि कुल संपत्ति कितनी है और किस लक्ष्य के लिए कितना पैसा जमा किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में जरूरत निवेश के नए विकल्प तलाशने की नहीं, बल्कि पहले से मौजूद पैसों को व्यवस्थित करने की होती है। इसके लिए जरूरी नहीं कि कोई जटिल वित्तीय योजना बनाई जाए। एक पन्ने पर आय, खर्च, कर्ज, सुरक्षा और निवेश की पूरी तस्वीर लिखना भी काफी मददगार हो सकता है। इस योजना का मकसद यह तय करना है कि कमाई खाते में आते ही पैसा कहां और कितना जाएगा, ताकि खर्च के बाद जो बचे उसी से निवेश करने की आदत न बने।

पहला कदम : आर्थिक सुरक्षा मजबूत करें

निवेश शुरू करने से पहले वित्तीय सुरक्षा की नींव मजबूत करना जरूरी है। यदि परिवार में आपकी आय पर दूसरे सदस्य निर्भर हैं तो पर्याप्त स्वास्थ्य बीमा और जरूरत के अनुसार टर्म जीवन बीमा पर ध्यान देना चाहिए। बीमा का उद्देश्य निवेश से कमाई करना नहीं, बल्कि अचानक आने वाले बड़े आर्थिक संकट से परिवार को बचाना है। इसी तरह कम से कम तीन से छह महीने के जरूरी घरेलू खर्च के बराबर रकम आपातकालीन निधि के रूप में अलग रखना उपयोगी है। इसे ऐसे साधन में रखा जाना चाहिए, जहां जरूरत पड़ने पर रकम आसानी से उपलब्ध हो। इस पैसे को शेयर बाजार में लगाकर ज्यादा रिटर्न कमाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

दूसरा कदम : महंगे कर्ज से पहले छुटकारा

अगर क्रेडिट कार्ड, व्यक्तिगत ऋण या किसी तत्काल ऋण पर बहुत ज्यादा ब्याज दिया जा रहा है तो निवेश बढ़ाने से पहले ऐसे कर्ज को खत्म करना प्राथमिकता होनी चाहिए। मसलन, क्रेडिट कार्ड का बकाया लंबे समय तक छोड़ने पर ब्याज तेजी से बढ़ सकता है। ऐसे कर्ज के रहते बाजार में निवेश करके ज्यादा रिटर्न कमाने की उम्मीद करना जोखिम भरा हो सकता है। इसलिए सभी कर्ज की सूची बनाएं। सामने बकाया रकम, ब्याज दर और हर महीने की किस्त लिखें। ज्यादा ब्याज वाले असुरक्षित कर्ज को पहले चुकाने की कोशिश करें।



हर महीने नहीं, समय समय पर करें समीक्षा

वित्तीय योजना का मतलब रोज शेयर बाजार देखना या बार-बार निवेश बदलना नहीं है। बाजार में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। लंबी अवधि के निवेशक के लिए अनुशासन और निरंतरता ज्यादा महत्वपूर्ण है। हां, आय बढ़ने, नौकरी बदलने, शादी, बच्चे होने, घर खरीदने या बड़े कर्ज जैसी परिस्थितियों में योजना की समीक्षा जरूर करनी चाहिए।

तीसरा कदम : लक्ष्यों के हिसाब से करें निवेश

सारी बचत को एक ही जगह लगाना सही रणनीति नहीं है। पहले यह तय करें कि पैसा कब चाहिए। पांच साल से कम अवधि वाले लक्ष्यों के लिए बहुत ज्यादा जोखिम वाले निवेश से बचना बेहतर है। वाहन खरीदना, घर की मरम्मत, बच्चों की निकट अवधि की फीस या अन्य जरूरी खर्च इसके उदाहरण हैं। ऐसे लक्ष्यों के लिए सुरक्षित बचत विकल्पों पर विचार किया जा सकता है। वहीं 10 साल या उससे अधिक अवधि वाले लक्ष्यों के लिए बाजार आधारित निवेश पर विचार किया जा सकता है। सेवानिवृत्ति, बच्चों की उच्च शिक्षा या लंबे समय में संपत्ति बनाने जैसे लक्ष्यों के लिए इक्विटी आधारित म्यूचुअल फंड या व्यापक बाजार सूचकांक आधारित फंड विकल्प हो सकते हैं। हालांकि निवेश का चुनाव व्यक्ति की जोखिम क्षमता, उम्र, आय और लक्ष्य के अनुसार होना चाहिए।

चौथा कदम : निवेश को अपने आप चलने दें

वित्तीय योजना तभी सफल होती है जब उसे नियमित रूप से लागू किया जाए। इसके लिए एसआईपी जैसी स्वचालित व्यवस्था उपयोगी हो सकती है। वेतन या आय खाते में आते ही निर्धारित रकम निवेश के लिए अलग हो जाए तो महीने के अंत में बची रकम निवेश करने की जरूरत नहीं पड़ती। मान लीजिए किसी व्यक्ति की मासिक आय 60 हजार रुपये है। वह जरूरी खर्च और सुरक्षा की रकम तय करने के बाद 10 हजार रुपये लंबे समय के लक्ष्य के लिए निवेश करना चाहता है। यदि हर महीने एक निश्चित तारीख को यह रकम स्वतः निवेश हो जाए तो बाजार की रोजाना की खबरों या मूड के आधार पर निवेश रोकने की संभावना कम होगी।

5वां कदम : लिखें पूरी तस्वीर

- मासिक आय : कितनी रकम हाथ में आती है।
- जरूरी खर्च : घर चलाने में कितना खर्च होता है।
- कर्ज : कितना बकाया है और ब्याज।
- आपातकालीन निधि : कितनी रकम अलग रखी।
- बीमा : स्वास्थ्य और जीवन बीमा कितना है।
- निवेश : हर महीने कितनी रकम और किस लक्ष्य के लिए निवेश होगी।
- लक्ष्य : अगले 3, 5, 10 और 20 साल में किन जरूरतों के लिए पैसा चाहिए।
- एक पन्ने से व्यक्ति को हर माह यह समझने में आसानी होगी कि उसकी आय कहां जा रही है व भविष्य के लिए कितना पैसा तैयार हो रहा है।

पुराने खातों और निवेश की भी करें सफाई

कई लोगों के पास जरूरत से ज्यादा बैंक खाते, क्रेडिट कार्ड और छोटे-छोटे निवेश होते हैं। समय-समय पर इनकी समीक्षा करनी चाहिए। जिन खातों या कार्ड का उपयोग नहीं हो रहा है, उनकी जरूरत और शुल्क की जांच करें। अलग-अलग निवेशों की सूची बनाकर देखें कि कहीं एक ही तरह के कई उत्पाद तो नहीं हैं। साथ ही बैंक खाते, बीमा, म्यूचुअल फंड, शेयर और अन्य वित्तीय निवेशों में नॉमिनी की जानकारी अपडेट रखें। परिवार में किसी अनहोनी की स्थिति में यह छोटी-सी सावधानी बहुत महत्वपूर्ण साबित हो सकती है।

पैसा बचाना ही पर्याप्त नहीं, उसे सही दिशा देना जरूरी

एक अच्छी वित्तीय योजना वह नहीं जिसमें सबसे ज्यादा निवेश उत्पाद हों, बल्कि वह है जिसमें हर रुपये की भूमिका स्पष्ट हो। पहले सुरक्षा, फिर महंगे कर्ज से मुक्ति और उसके बाद लक्ष्य आधारित निवेश—यह सरल क्रम आर्थिक अव्यवस्था को व्यवस्थित करने में मदद कर सकता है। योजना एक बार बनाकर भूलने के बजाय साल में कम से कम एक बार उसकी समीक्षा करें। धीरे-धीरे आय बढ़ने के साथ निवेश की रकम बढ़ाते रहें। यही अनुशासन लंबे समय में छोटी बचत को बड़ा वित्तीय सहारा बना सकता है।

30 की उम्र में निवेश शुरू कर रहे हैं तो पहले साल ऐसे बनाएं मजबूत आधार

- पहले आपातकालीन निधि और महंगे कर्ज से निपटें
- लक्ष्य के हिसाब से बचत और निवेश करना शुरू करें
- लंबी अवधि के लिए एसआईपी और सूचकांक फंड बेहतर विकल्प

जानकारी
बिजनेस डेस्क

अगर आपकी उम्र 30 साल है और आपने अभी तक निवेश शुरू नहीं किया है तो घबराने की जरूरत नहीं है। इस उम्र में आपके पास लंबी अवधि का फायदा उठाने के लिए पर्याप्त समय है। हालांकि निवेश की शुरुआत किसी खास शेयर या म्यूचुअल फंड को चुनने से नहीं, बल्कि अपनी आर्थिक स्थिति समझने से होनी चाहिए। पहले साल का लक्ष्य ज्यादा रिटर्न कमाना नहीं, बल्कि ऐसी वित्तीय व्यवस्था तैयार करना होना चाहिए जिसे आने वाले वर्षों में आसानी से जारी रखा जा सके। निवेश शुरू करने से पहले तीन सवालों के जवाब तलाशें-पैसा किस लक्ष्य के लिए चाहिए, कब चाहिए और बाजार में गिरावट आने पर आप कितना जोखिम उठा सकते हैं। इसके आधार पर ही निवेश की दिशा तय होगी।

सबसे पहले बनाएं आपातकालीन निधि

यदि आपके पास बचत नहीं है और क्रेडिट कार्ड या व्यक्तिगत ऋण जैसा महंगा कर्ज चल रहा है तो पहले साल का पूरा ध्यान निवेश बढ़ाने के बजाय वित्तीय आधार मजबूत करने पर होना चाहिए। कम से कम तीन से छह महीने के जरूरी खर्च के बराबर रकम आपातकालीन निधि में रखना उपयोगी है। नौकरी जाने, बीमारी, अचानक बड़े खर्च या किसी अन्य आपात स्थिति में यही रकम काम आएगी। इसे ऐसे विकल्प में रखना चाहिए जहां जरूरत पड़ने पर पैसा आसानी से निकाला जा सके। आपातकालीन निधि बनने के बाद ही लंबी अवधि के निवेश को धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए।



महंगे कर्ज को निवेश से पहले खत्म करें

क्रेडिट कार्ड का बकाया या ज्यादा ब्याज वाला व्यक्तिगत ऋण आपकी आर्थिक प्रगति को धीमा कर सकता है। इसलिए सभी कर्ज की सूची बनाएं और ब्याज दर देखें। ज्यादा ब्याज वाले कर्ज को पहले चुकाना बेहतर है। कर्ज खत्म होने के बाद उसकी मासिक किस्त के बराबर रकम को निवेश में लगाया जा सकता है। इस तरह कर्ज चुकाने की आदत सीधे निवेश की आदत में बदल सकती है।

हर लक्ष्य की तय करें समय सीमा

निवेश का तरीका इस बात पर निर्भर करता है कि पैसा कब चाहिए। तीन साल के भीतर जरूरत पड़ने वाली रकम को शेयर बाजार जैसे उतार-चढ़ाव वाले साधनों में लगाने से बचना चाहिए। कार खरीदना, शादी, घर की शुरुआती रकम या निकट अवधि की शिक्षा जैसे लक्ष्य इसके उदाहरण हैं। ऐसे लक्ष्यों के लिए बैंक सावधि जमा, आवर्ती जमा या अन्य अपेक्षाकृत सुरक्षित विकल्पों पर विचार किया जा सकता है। दूसरी ओर, यदि लक्ष्य 10, 15 या 20 साल दूर है तो बाजार आधारित निवेश पर विचार किया जा सकता है। सेवानिवृत्ति या बच्चे की उच्च शिक्षा जैसे लंबे लक्ष्यों में महंगाई को ध्यान में रखना जरूरी है।

शुरुआती निवेशक के लिए सूचकांक फंड सरल विकल्प

लंबी अवधि के निवेश की शुरुआत करने वाले निवेशक के लिए व्यापक बाजार सूचकांक पर आधारित म्यूचुअल फंड एक सरल विकल्प हो सकता है। ऐसे फंड किसी प्रमुख सूचकांक की कंपनियों में निवेश करते हैं। इससे एक ही कंपनी पर निर्भरता कम होती है और निवेशक को अलग-अलग शेयर चुनने की जरूरत नहीं पड़ती। हालांकि इक्विटी आधारित निवेश में बाजार जोखिम रहता है। इसलिए इसका इस्तेमाल उन्हीं लक्ष्यों के लिए करना चाहिए जिनकी समय सीमा लंबी हो।

उदाहरण से समझें

मान लीजिए रोहन की उम्र 30 साल है और उसे हर महीने कर कटौती के बाद 80 हजार रुपये मिलते हैं। उसके पास पहले से आपातकालीन निधि है। वह दो साल बाद कार खरीदना चाहता है और साथ ही सेवानिवृत्ति के लिए भी निवेश शुरू करना चाहता है। ऐसी स्थिति में वह अपनी क्षमता के अनुसार, उदाहरण के तौर पर, हर महीने 15 हजार रुपये कार के लक्ष्य के लिए सुरक्षित बचत में और 15 हजार रुपये लंबी अवधि के लिए इक्विटी आधारित म्यूचुअल फंड की एसआईपी में लगा सकता है। इस तरह दोनों लक्ष्यों का पैसा अलग रहेगा। कार के लिए रखा पैसा बाजार की गिरावट से प्रभावित नहीं होगा और सेवानिवृत्ति के लिए किया गया निवेश लंबे समय तक बढ़ने का अवसर पाएगा।

जोखिम क्षमता भी समझें

सिर्फ यह देखकर निवेश न करें कि कोई फंड या शेयर पिछले साल कितना बढ़ा। पहले यह समझें कि बाजार में 20-30 प्रतिशत गिरावट आने पर आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी। मान लीजिए आपने 10 हजार रुपये निवेश किए और कुछ समय बाद उसकी कीमत घटकर 8 हजार रुपये रह गई। यदि इससे आप घबरा कर निवेश बेच देंगे तो इक्विटी निवेश आपके लिए कठिन हो सकता है। लेकिन अगर आप उतार-चढ़ाव को स्वीकार कर लंबे समय तक निवेश बनाए रख सकते हैं तो आपकी जोखिम क्षमता ज्यादा हो सकती है। यानी निवेश का चुनाव केवल रिटर्न देखकर नहीं, बल्कि लक्ष्य और जोखिम क्षमता देखकर करें।

बचत को हर माह की आदत बनाएं

- सबसे कम कमाई वाले महीने को आधार बनाएं
- वेतन आते ही बचत अलग खाते में डालें
- पहले तैयार करें अपने लिए आपातकालीन कोष
- लंबे समय में मजबूत आर्थिक सुरक्षा तैयार

योजना
बिजनेस डेस्क

कई लोगों की कमाई हर महीने एक जैसी नहीं होती। कभी बोनस मिल जाता है तो कभी अतिरिक्त आमदनी हो जाती है। ऐसे अच्छे महीने में बचत भी बढ़ जाती है, लेकिन अचानक आया बड़ा खर्च या कम आय वाला महीना पूरी बचत खत्म कर देता है। नतीजा यह होता है कि कई साल कमाने के बाद भी व्यक्ति के पास आपात स्थिति के लिए पर्याप्त रकम नहीं होती। समस्या हमेशा कम कमाई नहीं होती, बल्कि नियमित बचत के लिए तय व्यवस्था का अभाव भी इसका बड़ा कारण है। वित्तीय मजबूती के लिए बचत को महीने के अंत में बची रकम पर निर्भर करने के बजाय इसे कमाई का पहला काम बनाना जरूरी है। यानी पैसा आते ही बचत की रकम अलग और उसके बाद खर्च। यही छोटी आदत लंबे समय में मजबूत आर्थिक सुरक्षा तैयार कर सकती है।

पहले समझें, बचत क्यों नहीं हो रही

बचत शुरू करने से पहले यह पता लगाना जरूरी है कि पैसा बच क्यों नहीं रहा। कुछ लोगों की आय हर महीने बदलती है। स्वतंत्र काम करने वाले, कमीशन पर काम करने वाले या कारोबार से जुड़े लोगों के लिए एक महीने की आय दूसरे महीने से काफी अलग हो सकती है। दूसरी समस्या यह है कि बचत का इरादा तो होता है, लेकिन हर महीने कोई न कोई खर्च उसे पीछे धकेल देता है। कई लोग सोचते हैं कि महीने के अंत में जो रकम बचेगी, उसे बचा लेंगे। व्यवहार में अक्सर महीने के अंत तक बहुत कम रकम बचती है। इसलिए बचत के लिए इच्छा नहीं, व्यवस्था बनाना जरूरी है।

3 माह की आय से तय करें अपना बजट

सबसे पहले पिछले तीन महीनों की कुल आय देखें और उसका औसत निकालें। लेकिन यदि आय में काफी उतार-चढ़ाव रहता है तो औसत आय के बजाय सबसे कम आय वाले महीने को अपना बजट आधार बनाना ज्यादा सुरक्षित हो सकता है। उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति को तीन महीनों में 40 हजार, 48 हजार और 35 हजार रुपये मिले। औसत आय करीब 41 हजार रुपये बैठती है, लेकिन बजट 35 हजार रुपये की सबसे कम आय को आधार मानकर बनाया जा सकता है। इससे कम आय वाले महीने में भी जरूरी खर्च पूरे करने में परेशानी नहीं होगी। अब इसमें से किराया, राशन, बिजली-पानी, आने-जाने और अन्य जरूरी खर्च अलग करें।



वेतन आते ही पहले बचत करें

नियमित वेतन पाने वालों के लिए सबसे आसान तरीका है—पहले खुद को भुगतान करें। मान लीजिए आपकी मासिक आय 40 हजार रुपये है और आप हर महीने 5 हजार रुपये बचाना चाहते हैं। वेतन खाते में आते ही 5 हजार रुपये दूसरे खाते में स्वतः स्थानांतरित करने की व्यवस्था कर दें। इसके बाद बचे पैसे से महीने का खर्च चलाएं। इसका फायदा यह है कि बचत की रकम खर्च करने वाले खाते में पड़ी ही नहीं रहेगी। बचत को इच्छाशक्ति के भरोसे रखने के बजाय स्वचालित व्यवस्था का हिस्सा बनाया जा सकता है।

आय तय नहीं तो प्रतिशत के हिसाब से बचाएं

यदि कमाई हर महीने अलग है तो निश्चित रकम बचाने के बजाय आय का एक तय प्रतिशत अलग करना बेहतर हो सकता है। उदाहरण के लिए हर भुगतान का 15 से 20 प्रतिशत बचत खाते में डालने का नियम बनाया जा सकता है। मान लीजिए किसी स्वतंत्र पेशेवर की मासिक आय 25 हजार से 60 हजार रुपये के बीच रहती है। वह हर भुगतान का 18 प्रतिशत बचत के लिए अलग करता है। इस तरह कम आय वाले महीने में बचत की रकम कम होगी और ज्यादा कमाई होने पर बचत अपने आप बढ़ जाएगी।

बचत के लिए अलग खाता रखें

बचत और रोजमर्रा के खर्च का पैसा एक ही खाते में रखने से अनजाने में बचत खर्च होने की संभावना रहती है। इसलिए बचत के लिए अलग बैंक खाता रखना उपयोगी हो सकता है। संभव हो तो इसे रोजमर्रा के खाते से अलग बैंक में रखें। बोनस, कर वापसी या अचानक मिली अतिरिक्त रकम का एक हिस्सा सीधे इसी खाते में डाल सकते हैं।

पहले आपातकालीन कोष, बाद में ज्यादा रिटर्न

बचत का पहला उद्देश्य हर बार ज्यादा रिटर्न कमाना नहीं होना चाहिए। पहले ऐसा आपातकालीन कोष तैयार करें जिससे अचानक आने वाले खर्च के समय निवेश या कर्ज पर निर्भरता कम हो। नियमित वेतन वालों के लिए तीन से छह महीने के जरूरी खर्च के बराबर आपातकालीन निधि एक अच्छा आधार हो सकती है। वहीं जिनकी आय में ज्यादा उतार-चढ़ाव रहता है, वे छह से नौ महीने के जरूरी खर्च के बराबर रकम रखने पर विचार कर सकते हैं। यह रकम ऐसे विकल्प में रखी जानी चाहिए जहां जरूरत पड़ने पर पैसा आसानी से उपलब्ध हो। आपातकालीन निधि का पहला उद्देश्य सुरक्षा और तरलता है, अधिकतम रिटर्न नहीं।

योजना बनाकर भूल जाना भी ठीक नहीं

बचत की योजना बनाकर उसे भूल जाना भी सही नहीं है। महीने में केवल 15 मिनट निकालकर देखें कि आय कितनी रही, जरूरी खर्च कितना हुआ और तय बचत लक्ष्य पूरा हुआ या नहीं। यदि किराया बढ़ गया, परिवार में नया खर्च जुड़ गया या आय में बदलाव हुआ है तो बचत लक्ष्य में भी बदलाव किया जा सकता है। महत्वपूर्ण यह है कि बचत पूरी तरह बंद न हो।

इन पांच गलतियों से बचें

- महीने के अंत में बचतः तब तक पैसा खत्म हो सकता है।
- एक ही खाते में बचत और खर्चः बचत अनजाने में खर्च हो सकती है।
- सिर्फ अच्छे महीने में बचतः इससे नियमित आदत नहीं बनती।
- बिना बजट तय किए रकम निर्धारित करनाः लक्ष्य आपकी वास्तविक आय से मेल खाना चाहिए।
- योजना की समीक्षा न करनाः आय और खर्च बदलने के साथ बजट भी बदलना चाहिए।

निवेश से पहले बचत की मजबूत नींव जरूरी

शेयर, म्यूचुअल फंड या किसी अन्य निवेश में पैसा लगाने से पहले नियमित बचत की आदत और आपातकालीन निधि तैयार करना जरूरी है। कम रकम से शुरुआत करना कोई समस्या नहीं है। महीने में 500 रुपये भी नियमित रूप से बचाना उस महीने हजारों रुपये बचाकर अगले महीने फिर शून्य पर पहुंचने से बेहतर है।

अलर्ट 3 से 10 साल की अवधि में निवेश करने का बेहतीन विकल्प, लक्ष्य के हिसाब से तय होगी मासिक किस्त, तैयार होगा फंड

बच्चे के नाम हर महीने बचत, तैयार होगा एक लाख का फंड एसबीआई की 'हर घर लखपति' आरडी में 6.7% सालाना ब्याज

समझदारी
बिजनेस डेस्क

बच्चे की पढ़ाई, उच्च शिक्षा या भविष्य की किसी बड़ी जरूरत के लिए समय रहते बचत शुरू करना समझदारी है। ऐसे में अगर आप बाजार के उतार-चढ़ाव से अलग रहकर हर महीने एक निश्चित रकम जमा करना चाहते हैं, तो भारतीय स्टेट बैंक यानी एसबीआई की 'हर घर लखपति' योजना एक विकल्प हो सकती है। यह कोई अलग निवेश उत्पाद नहीं, बल्कि रिकरिंग डिपॉजिट यानी आरडी का एक रूप है। इसमें निवेशक हर महीने एक तय रकम जमा करता है और तय अवधि पूरी होने पर जमा रकम के साथ ब्याज मिलता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इस योजना में फिलहाल 6.7% सालाना ब्याज मिल रहा है। निवेश की अवधि 3 साल से 10 साल तक रखी जा सकती है। यानी अभिभावक बच्चे की उम्र और भविष्य के लक्ष्य के हिसाब से अवधि चुन सकते हैं।

क्या है 'हर घर लखपति' योजना?

नाम से लग सकता है कि यह कोई अलग सरकारी योजना है, लेकिन वास्तव में यह एसबीआई की आरडी आधारित सुविधा है। इसका उद्देश्य नियमित बचत के जरिए एक तय लक्ष्य राशि तैयार करना है। इसे सामान्य आरडी की तरह समझ सकते हैं, जिसमें हर महीने एक निश्चित राशि जमा करनी होती है। मसलन, अगर अभिभावक बच्चे के लिए हर महीने थोड़ी रकम अलग रखते हैं तो कुछ वर्षों में यह रकम ब्याज के साथ एक बड़े फंड में बदल सकती है।

3 से 10 साल तक निवेश

इस योजना में 3 साल से 10 साल तक की अवधि चुनी जा सकती है। अवधि का चुनाव बच्चे की जरूरत के हिसाब से करना महत्वपूर्ण है। यदि बच्चे की उच्च शिक्षा के लिए पांच साल बाद रकम चाहिए तो पांच साल की अवधि वाला लक्ष्य बनाया जा सकता है। अगर जरूरत 10 साल बाद है तो लंबी अवधि का विकल्प चुना जा सकता है। हालांकि निवेश की अवधि तय करते समय यह भी देखना चाहिए कि बीच में पैसों की जरूरत पड़ सकती है या नहीं। समय से पहले आरडी बंद करने पर बैंक के नियम लागू हो सकते हैं।



बच्चे के नाम पर खाता कैसे खुलेगा?

इस योजना में कोई व्यक्ति सिंगल या जॉइंट अकाउंट खोल सकता है। 10 साल से अधिक उम्र के बच्चे के नाम पर भी खाता खोला जा सकता है, लेकिन इसके लिए बच्चे का ठीक से हस्ताक्षर करने में सक्षम होना जरूरी है। यदि बच्चा हस्ताक्षर करने में सक्षम नहीं है तो उसके नाम पर खाता माता-पिता या अभिभावक के साथ खोला जा सकता है। यानी बच्चे की उम्र और उसकी हस्ताक्षर करने की क्षमता के आधार पर खाते का संचालन तय होगा।

1 लाख रुपये का लक्ष्य कैसे पूरा होगा?

अगर आपका लक्ष्य बच्चे के लिए 5 साल में 1 लाख रुपये का फंड तैयार करना है तो उपलब्ध गणना के अनुसार हर महीने करीब 1,420 रुपये जमा करने होंगे। इसी तरह यदि आप 10 साल में 1 लाख रुपये का लक्ष्य रखते हैं तो मासिक जमा करीब 610 रुपये होगी। इससे यह समझना आसान है कि लंबी अवधि चुनने पर मासिक बचत का बोझ कम हो सकता है। हालांकि इन आंकड़ों को उदाहरण के रूप में देखना चाहिए। वास्तविक मासिक किस्त बैंक की लागू ब्याज दर, आरडी की शर्तों और गणना पद्धति के अनुसार बदल सकती है।

लक्ष्य बढ़ाएं तो किस्त भी बढ़ेगी

इस योजना में लक्ष्य केवल 1 लाख रुपये तक सीमित नहीं है। निवेशक अपनी जरूरत के अनुसार 2 लाख, 3 लाख, 4 लाख रुपये या उससे अधिक का लक्ष्य भी निर्धारित कर सकता है। लक्ष्य राशि बढ़ने के साथ मासिक किस्त भी बढ़ेगी। मसलन, जिस परिवार को बच्चे की उच्च शिक्षा के लिए 4 लाख रुपये का फंड बनाना है, वह छोटी अवधि के बजाय लंबी अवधि चुनकर मासिक निवेश का बोझ कम रखने की कोशिश कर सकता है।

छोटी बचत से बड़ा लक्ष्य

इस योजना का सबसे बड़ा फायदा अनुशासित बचत है। अक्सर परिवार एकमुश्त रकम बचाने की योजना तो बनाते हैं, लेकिन नियमित रूप से पैसा अलग नहीं रख पाते। आरडी में हर महीने तय रकम जमा करने की व्यवस्था होने के कारण बचत की आदत बन सकती है। मान लीजिए परिवार हर महीने करीब 600 रुपये अलग रखता है। यह रकम रोजाना के खर्च में बहुत बड़ी नहीं लगती, लेकिन लंबे समय तक लगातार जमा होने पर ब्याज के साथ एक निश्चित फंड तैयार कर सकती है।

सिर्फ ब्याज देखकर फैसला न करें

हालांकि 6.7% ब्याज आकर्षक लग सकता है, लेकिन निवेश का फैसला केवल ब्याज दर देखकर नहीं करना चाहिए। अभिभावकों को यह भी देखना चाहिए कि बच्चे का लक्ष्य कितने साल बाद है, कितनी रकम की जरूरत होगी और महंगाई के कारण भविष्य में उस लक्ष्य की लागत कितनी बढ़ सकती है। मसलन, आज उच्च शिक्षा पर 5 लाख रुपये खर्च हो रहे हैं तो 8-10 साल बाद यही खर्च काफी अधिक हो सकता है। इसलिए लंबे समय के लक्ष्य के लिए केवल आरडी पर निर्भर रहने के बजाय अन्य निवेश विकल्पों से भी इसकी तुलना करनी चाहिए।

टैक्स और समय से पहले निकासी के नियम भी समझें

आरडी में मिलने वाला ब्याज कर नियमों के दायरे में आ सकता है। इसलिए बड़ी रकम जमा करने से पहले अपनी कर स्थिति के अनुसार जानकारी लेना जरूरी है। इसी तरह अगर बीच में पैसे की जरूरत पड़ती है तो समय से पहले आरडी बंद करने या आंशिक निकासी से जुड़े बैंक के नियम लागू हो सकते हैं। निवेश शुरू करने से पहले एसबीआई की मौजूदा ब्याज दर, आरडी की शर्तें, नाबालिग के खाते के नियम और समय से पहले खाता बंद करने के प्रावधान जरूर जांच लें।

ऐसे समझें योजना

- योजनाः एसबीआई 'हर घर लखपति'
- प्रकारः रिकरिंग डिपॉजिट (आरडी)
- ब्याज दर 6.7% सालाना
- अवधि 3 से 10 साल
- 5 साल में 1 लाख का उदाहरण करीब 1,420 रुपये मासिक
- 10 साल में 1 लाख का उदाहरण करीब 610 रुपये मासिक
- लक्ष्य 1 लाख से अधिक भी
- खाता सिंगल या जॉइंट
- बच्चे के नाम खाता 10 साल से अधिक उम्र में, शर्तों के अनुसार
- कम उम्र/हस्ताक्षर में असमर्थ बच्चा माता-पिता/अभिभावक के साथ
- ब्याज दर और बैंक के नियम समय के साथ बदल सकते हैं।

खबर संक्षेप

महिला को बेसुध कर जेवर ठगे, दो महिलाओं समेत तीन पर केस

रेवाड़ी। मोती चौक के पास पांच दिन एक महिला को रूमाल सुंघाकर बेसुध करने के बाद लाखों रुपये के जेवरात की ठगी करने के मामले में सिटी पुलिस ने दो महिलाओं सहित तीन लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया है। पुलिस सीसीटीवी कैमरों की मदद से आरोपियों की तलाश कर रही है।

पुलिस को दर्ज शिकायत में शहर निवासी मल्लिका रानी ने बताया कि वह गत 5 अक्टूबर को घंटेश्वर मंदिर के पास रेहड़ी पर सब्जी खरीद रही थी। इसी दौरान एक महिला उसके पास आई। उसने दूसरी रेहड़ी से सस्ती सब्जी खरीदने की बात कही। वह महिला उसे अपने साथ दूसरी रेहड़ी की ओर ले गई, जहां उसके परिचित एक महिला और पुरुष खड़े थे। उसे बातों में उलझाकर एक रूमाल सुंघा दिया गया, जिसके बाद वह बेसुध हो गई। तीनों उसे एक ई रिक्शा में रेलवे स्टेशन की ओर ले गए। वहां उसके सोने के कड़े अंगूठी और झुमकी उतार लिए। उसे हनुमान मंदिर के पास छोड़कर आरोपी फरार हो गए। ठगी का शिकार बनने के बाद वह दो दिन तक सहमी रही। पुलिस ने शिकायत पर केस दर्ज करने के बाद आरोपियों की तलाश शुरू कर दी।

पुलिस ने कराई लूट के आरोपियों की परेड

बावल। थाना बावल पुलिस ने तीन शराब ठेकों पर तोड़फोड़ व लूटपाट करने के मामले में गिरफ्तार किए गए दो आरोपियों को मौके पर ले जाकर परेड़ कराई। पुलिस ने रिमांड के दौरान आरोपियों से पूछताछ की है, जिसके आधार पर उनके साथियों की तलाश की जा रही है। पुलिस ने शराब ठेकों पर लूटपाट के बाद ठेकों के गुरप संचालक की शिकायत पर 8-10 आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया था। शुक्रवार को पुलिस ने राजस्थान के सहमत नगर निवासी लोकेश और रानौली निवासी करण उर्फ डोगा को गिरफ्तार करने के बाद कोर्ट से रिमांड पर लिया था। पुलिस ने दोनों आरोपियों को घटनास्थल पर पैदल घुमाते हुए सीन ऑफ क्राइम की जानकारी एकत्रित की। पुलिस के अनुसार मामले के अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी के प्रयास भी किए जा रहे हैं।

संदिग्ध लिंक मिलने पर तुरंत करें अनदेखा

साइबर ठगों से बचने के लिए एडवाइजरी जारी

साइबर ठग अक्सर बैंक अधिकारी, कोरियर सर्विस, बिजली विभाग या किसी कंपनी के कस्टमर केयर अधिकारी बनकर लोगों को लिंक या एपीके एक्सटेंशन वाली फाइल भेजते हैं

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

वर्तमान में फर्जी एपीके फाइलों के माध्यम से मोबाइल हैक करके बैंक खातों से पैसे उड़ाने के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा ने साइबर सुरक्षा माह के अंतर्गत साइबर अपराधों पर अंकुश लगाने और आमजन को सतर्क करने के उद्देश्य से विशेष एडवाइजरी जारी की है। क्या है ठगी का तरीका एसपी मीणा ने बताया कि साइबर ठग अक्सर बैंक अधिकारी, कोरियर सर्विस, बिजली विभाग या किसी कंपनी के कस्टमर केयर अधिकारी बनकर लोगों को व्हाट्सएप, टेलीग्राम या एसएमएस के जरिए एक लिंक या एपीके एक्सटेंशन वाली फाइल भेजते हैं। जैसे ही कोई व्यक्ति इस फाइल को डाउनलोड करके इंस्टॉल करता है, यह मैलवेयर या फर्जी ऐप मोबाइल के बैकग्राउंड में काम करने लगता है। इसके इंस्टॉल होते ही ठगों को मोबाइल का पूरा रिमोट एक्सेस मिल जाता है। इसके जरिए अपराधी आपके फोन के मैसेज, ओटीपी, गैलरी, कॉन्टैक्ट्स और बैंकिंग ऐप्स को आसानी से हैक कर लेते हैं और चंद मिनटों में बैंक खाता खाली कर देते हैं।

बचाव के उपाय

अज्ञात स्रोत से ऐप डाउनलोड न करें किसी भी ऐप को केवल गूगल प्ले स्टोर या एप्पल प्ले स्टोर जैसे आधिकारिक और प्रमाणित प्लेटफॉर्म से ही डाउनलोड करें।



व्हाट्सएप/एसएमएस की अनजान फाइलों से बचें किसी भी अनजान नंबर से आए लिंक या एपीके फाइल को कभी भी डाउनलोड या इंस्टॉल न करें।

ऐप परमिशन का ध्यान रखें किसी भी ऐप को इंस्टॉल करते समय यह जरूर जांच लें कि वह किन-किन चीजों की परमिशन मांग रहा है। गैर-जरूरी परमिशन न दें।

स्क्रीन शेयरिंग ऐप्स से सावधान किसी भी अनजान व्यक्ति के कहने पर एनी डेस्क, टीम व्यूअर या क्विक सपोर्ट जैसे स्क्रीन शेयरिंग ऐप बिल्कुल डाउनलोड न करें।

सुरक्षा सेटिंग्स ऑन रखें अपने स्मार्टफोन की सेटिंग्स में जाकर अज्ञात स्रोतों से इंस्टॉल करें के विकल्प को हमेशा बंद रखें।

कस्टमर केयर का सही नंबर खोजें किसी भी समस्या के लिए गूगल पर कस्टमर केयर नंबर सर्च करते समय अत्यधिक सावधानी बरतें। हमेशा संबंधित कंपनी की आधिकारिक वेबसाइट

हेल्पलाइन नंबर 1930 पर कॉल करें

एसपी कहा कि सतर्कता ही साइबर अपराध से बचाव का सबसे बड़ा हथियार है। यदि किसी भी नागरिक के साथ साइबर ठगी हो जाती है, तो घबराएं नहीं, बल्कि तुरंत राष्ट्रीय साइबर क्राइम हेल्पलाइन नंबर 1930 पर कॉल करें। इसके अलावा, भारत सरकार के आधिकारिक साइबर पोर्टल साइबरक्राइम.जीओवी.इन पर अपनी शिकायत दर्ज करें।

बास गांव की पंचायती जमीन से हटवाया अतिक्रमण

धारूहेड़ा। नंदरामपुर बास गांव में लंबे समय से पंचायती जमीन पर किए गए अतिक्रमण को शनिवार को पुलिस बल की मौजूदगी में हटवा दिया गया। जमीन खाली होने से ग्रामीणों को राहत मिली है। गांव की पंचायती जमीन पर काफी समय प्रभावशाली लोगों ने अतिक्रमण किया हुआ था। पंचायत की ओर से पूर्व में अतिक्रमण करने वाले लोगों को नोटिस जारी किए थे, लेकिन उन्होंने अतिक्रमण नहीं हटाया। पंचायत ने प्रशासनिक प्रक्रिया पूरी करते हुए शनिवार को इयूटी मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में अतिक्रमण साफ करा दिया। पुलिस बल की मौजूदगी के चलते इस कार्रवाई का विरोध की हिम्मत नहीं हुई।

सेवा सेतु कैंप के माध्यम से नागरिकों को दी योजनाओं की जानकारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

हरियाणा सरकार की ओर से चलाए जा रहे सेवा संकल्प अभियान के तहत जिले में सेवा सेतु कैंप आयोजित किए जा रहे हैं। इन शिविरों का उद्देश्य पात्र परिवारों को केंद्र व प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से जोड़ना और उन्हें सरकारी सेवाओं का लाभ लेने के लिए जागरूक करना है। शनिवार को गांव रोहड़ाई में सेवा सेतु कैंप का आयोजन किया गया। शिविर में विभिन्न विभागों की ओर से स्टॉल लगाकर नागरिकों को विभागीय सेवाओं, जन कल्याणकारी योजनाओं और पात्रता संबंधी जानकारी दी गई। साथ ही, पात्र लाभार्थियों को योजनाओं के लिए आवेदन करने की प्रक्रिया के बारे में भी अवगत कराया गया।



रेवाड़ी। कैंप में जानकारी लेते हुए नागरिक।

कल कोसली में कैंप लगेगा

सेवा संकल्प अभियान के नोडल अधिकारी एवं एडीसी राहुल मोदी ने बताया कि ये शिविर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की अंत्योदय उत्थान की सोच को साकार करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल हैं। इनका उद्देश्य जरूरतमंद और पात्र परिवारों तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाना तथा उनकी समस्याओं का समाधान करना है। उन्होंने बताया कि शिविरों में दीन दयाल लाडो लक्ष्मी योजना, मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उत्थान योजना, स्वरोजगार, कौशल विकास, ऋण सुविधा सहित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी जा रही है। एडीसी ने बताया कि सोमवार को कोसली में सेवा सेतु कैंप आयोजित किया जाएगा।

आरपीएस स्कूल में ड्राइंग और पेंटिंग प्रतियोगिता

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कनीना

आरपीएस इंटरनेशनल स्कूल भड़फ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के महत्वाकांक्षी मेरा भारत-सेवा संकल्प अभियान 2026-27 के अंतर्गत ड्राइंग एंड पेंटिंग प्रतियोगिता हुई। विद्यालय परिसर में आयोजित इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने अपनी कला और रचनात्मकता से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। यह प्रेरणादायक पहल सेवा, दया और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को समर्पित थी। कार्यक्रम का मुख्य थीम सेवा- संस्कार-संकल्प रहा। गुरुवार को सुबह 10 बजे से शुरू हुए इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. विश्वेश्वर कौशिक ने शिरकत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता आरपीएस ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स की चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव ने की। विद्यालय के 28वें शैक्षिक वर्ष में आयोजित इस कार्यक्रम ने शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों के महत्व को भी रेखांकित किया। प्रतियोगिता में कक्षा नर्सरी से आठ तक के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। बच्चों ने मेरा भारत, स्वच्छ भारत, सेवा ही धर्म है और एक भारत श्रेष्ठ भारत जैसे विषयों पर अपनी कल्पना को कैनवास पर उतारा।



कनीना। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि। फोटो : हरिभूमि

कला बच्चों के सर्वांगीण विकास का सबसे सशक्त माध्यम

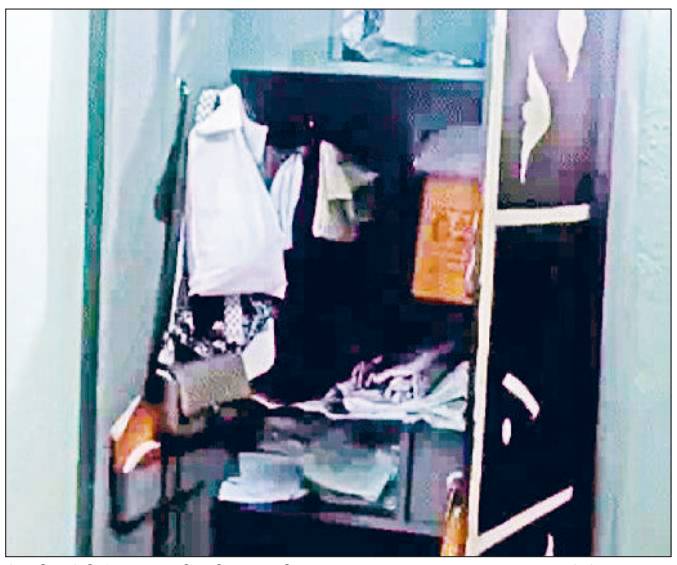
मुख्य अतिथि डॉ. विश्वेश्वर कौशिक ने कहा कि कला बच्चों के सर्वांगीण विकास का सबसे सशक्त माध्यम है। ऐसी प्रतियोगिताएं बच्चों में आत्मविश्वास और सामाजिक चेतना पैदा करती हैं। वहीं चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव ने कहा कि आरपीएस संस्थान का लक्ष्य केवल किताबी ज्ञान देना नहीं, बल्कि बच्चों को एक जिम्मेदार नागरिक बनाना है। आरपीएस महेंद्रगढ़ प्राचार्य डॉ किशोर तिवारी, आरपीएस कनीना की प्राचार्य ज्योति भट्ट, समस्त स्टाफ व शिक्षक मौजूद रहे।

बावल में मकान और मंदिर में चोरी, 90 हजार रुपये उड़ाए

- सीसीटीवी फुटेज खंगालकर चोरों की तलाश में जुटी पुलिस

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बावल

कस्बे में चोरों का आतंक लगातार बढ़ता जा रहा है। चोरों ने एक मकान व मंदिर को निशाना बनाते हुए चोरी की वारदातों को अंजाम दिया है। पुलिस ने केस दर्ज करने के बाद चोरी की जांच शुरू कर दी। पुलिस शिकायत में मोहल्ला हसनपुरा निवासी अश्वनी ने बताया कि वह कुछ दिनों के लिए अपनी पत्नी के साथ घर से बाहर गया हुआ था। वापस आने पर मकान के गेट का ताला टूटा हुआ मिला। घर के अंदर सारा सामान बिखरा हुआ था। कमरे में चेक करने पर अलमारी में रखे लगभग 90 हजार रुपये गायब मिले। पुलिस ने उसकी शिकायत पर मौका मुआयना करने के बाद चोरी का केस दर्ज कर लिया। दूसरी ओर चोर देवी माता मंदिर का ताला तोड़कर दानपात्र से नकदी चोरी कर ले गए। पुलिस ने पुजारी की शिकायत पर चोरी का केस दर्ज करने के बाद सीसीटीवी कैमरों की फुटेज से चोरों का पता लगाने के प्रयास शुरू कर दिए।



रेवाड़ी। चोरी के बाद खुली पड़ी अलमारी। फोटो : हरिभूमि

नशा मुक्त एवं स्वस्थ जीवन शैली अपनाएं छात्र

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

जिला पुलिस की ओर से युवाओं को नशे के दुष्परिणामों से बचाने और जिले को नशा मुक्त बनाने के उद्देश्य से विशेष जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं। पुलिस की ओर से गवर्नमेंट पॉलिटेक्निक संस्थान लिसाना में नशा मुक्ति जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर सदर थाना एचएचओ पीएसआई राकेश कुमार टीम के साथ मौजूद थे। इस मौके पर आचार्य कर्मबीर ने नैतिक मूल्यों और स्वस्थ जीवन शैली के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि युवा देश की रीढ़ हैं और एक सशक्त समाज के निर्माण के लिए उनका शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ होना अनिवार्य है। उन्होंने विद्यार्थियों को नशे से दूर रहने, अनुशासन अपनाने और अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने का आह्वान किया। पीएसआई राकेश कुमार ने विद्यार्थियों को नशे की दलदल से दूर रहने और समाज को जागरूक करने की शपथ दिलाई। उन्होंने कहा कि नशा केवल एक व्यक्ति को नहीं, बल्कि उसके पूरे परिवार और समाज को बर्बाद कर देता है। उन्होंने बढ़ते साइबर अपराधों से बचाव और यातायात नियमों की भी जानकारी दी। आसपास कोई व्यक्ति नशेका कारोबार करता है तो तुरंत पुलिस को सूचना दें।



रेवाड़ी। कार्यक्रम में मौजूद पुलिस टीम व विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

26 को महापंचायत में भाग लेंगी आंगनबाड़ी वर्कर्स

रेवाड़ी। केंद्रीय श्रमिक संगठन एआईयूटीयूसी से संबंधित आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सहायिका यूनियन की बैठक नेताजी सुभाष चंद्र बोस पार्क में यूनियन की जिला प्रधान तारा देवी की अध्यक्षता में हुई। बैठक में फैसला लिया गया कि जिले आंगनबाड़ी कार्यकर्ता व सहायिकाएं आगामी 26 अक्टूबर को नांदल भवन बोहर रोहतक में होने वाली महापंचायत में भाग लेगी। बैठक में आंगनबाड़ी से संबंधित विभिन्न समस्याओं व मांगों पर विचार किया गया। कार्यकर्ता व सहायिकाओं को सरकारी कर्मचारी का दर्जा देने, 2021-22 के आंदोलन में टर्मिनेट हुई कार्यकर्ताओं का हड़ताल के दौरान का मानदेय देने, न्यूनतम वेतन, भवनों का किराया व मानदेय समय पर देने, ऑनलाइन काम को कम करने, गैस सिलेंडर के पैसे समय पर देने की मांग की गई।

दिल्ली एनसीआर में शूटिंग चैंपियनशिप में खेल नर्सरी के निशानेबाजों ने जीते 6 मेडल

- दिव्यांशु ने स्वर्ण पदक के साथ 3000 एवं 3100 की नकद राशि के साथ ट्रॉफी जीती

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

गुरुग्राम व फरीदाबाद में आयोजित हुई ओपन शूटिंग चैंपियनशिप में जिले के निशानेबाजों ने 1200 खिलाड़ियों में से तीन गोल्ड, दो सिल्वर और एक ब्रॉन्ज मेडल जीता है। शहर के सेक्टर-4 स्थित राव शूटिंग अकादमी में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। गुरुग्राम में आयोजित हुई रेजांगला शूटिंग चैंपियनशिप एवं फरीदाबाद में आयोजित हुई ऐम शूटिंग चैंपियनशिप में दिव्यांशु यादव ने दोनों ही चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक के साथ 3000 एवं 3100 की नकद राशि के साथ ट्रॉफी जीती। मात्र 10 साल के दिव्यांशु ने 200 में से 198 का स्कोर करके दोनों प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रहे। साथ ही फरीदाबाद में आयोजित हुई चैंपियनशिप में काशवी शर्मा ने 200 में से 195 का स्कोर लगाकर कांस्य पदक हासिल किया। वही 10 मीटर एयर राइफल में खेलते हुए ईशा ने 410 का स्कोर कर स्वर्ण पदक हासिल किया। चहक यादव ने 10 मीटर एयर पिस्टल विमेन वर्ग में खेलते हुए सिल्वर मेडल हासिल किया। वही हिमानी टॉप 8 फाइनल में जगह बनाने में कामयाब रही, मगर पदक से चूक गई। खिलाड़ी वंशिका में 10 मीटर पिस्टल सब यूथ विमेन वर्ग में कांस्य पदक हासिल किया। अंतरराष्ट्रीय कोच रमन राव ने बताया कि अकादमी के तीन खिलाड़ी एशिया में पदक व इक्कीस खिलाड़ी राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीत चुके हैं।



रेवाड़ी। खिलाड़ियों का स्वागत करते हुए कोच रमन राव। फोटो : हरिभूमि

अनाज मंडी में किसानों की सुविधा के लिए गांववार शेड्यूल

- 12 से 17 अक्तूबर तक निर्धारित शेड्यूल के अनुसार होगी फसल की खरीद, किसानों से निर्धारित दिन पर मंडी में फसल लाने की अपील

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

बाजार में फसल की खरीद को सुचारू रूप से संचालित करने और किसानों को किसी प्रकार की परेशानी से बचाने के लिए मार्केट कमेटी रेवाड़ी की ओर से नई अनाज मंडी रेवाड़ी के लिए गांववार साप्ताहिक शेड्यूल जारी किया गया है। इस शेड्यूल के अनुसार 12 अक्तूबर से 17 अक्तूबर तक अलग-अलग गांवों के किसान निर्धारित दिनों में अपनी फसल मंडी में लेकर सकेंगे।

इसका उद्देश्य मंडी में फसल की आवक को व्यवस्थित करना और किसानों को अपनी उपज बेचने में सुविधा प्रदान करना है।

किसान अपनी फसल ला सकेंगे

▶▶ **12 अक्तूबर** सोमवार को गढ़ी, बोलनी, कापड़ीवास, जीतपुरा इस्तमुरार, खलियावास, निखरी, निखरी, रालियावास, चिल्हड, धनौरा, भूरथल ठेठर, भटसाना, जैतपुर शेखपुर, गोकलपुर, बुड़ाना, बुड़ानी, रामगढ़, तुर्कियावास और कंवाली गांवों के किसान अपनी फसल ला सकेंगे।

▶▶ **13 अक्तूबर** मंगलवार को लोधाना, पिथनावास, हांसाका, मसानी, फदनी, फिदेडी, ततारपुर खालसा, अलावलपुर, गोपालपुर उर्फ प्राणपुरा, बासदूढा, ऊंचा, कोलाना, नांगल जमापुर, मंढोला और खंडोडा गांवों के किसानों के लिए शेड्यूल रहेगा।

▶▶ **14 अक्तूबर** बुधवार को बिकानेर, लिसाना, गांगायचा अहीर, गांगायचा जाट, जोनावास, डूंगरवास, रोजका, रसगण, मुंड़या खेड़ा, खिजुरी, मोलावास, कान्हावास, फतेहपुरी, श्योराज माजरा, खलीलपुर, कालाका, मांडेया, देहलावास, गुलाबपुरा और जाडरा गांवों के किसान मंडी में फसल ला सकेंगे।

▶▶ **15 अक्तूबर** गुरुवार को मोहनपुरा, खरसानकी, जैतडावास, गढ़ी अलावलपुर, महेश्वरी, घटाल महनियावास, ओकेडा, सुंदरोज, ढाणी सुंदरोज, बाढ़ सुंदरोज, खोरी, शाहबाजपुर इस्तमुरार, शेखपुर शिकारपुर, किशनगढ़, चांदावास, बूढ़पुर, गिंदोखर, लाखनौर नपुर, बोडिया कमालपुर और अहरौद गांवों के किसान अपनी फसल ला सकेंगे।

▶▶ **16 अक्तूबर** शुक्रवार को संगवाड़ी, भूड़ला, गुरदास माजरा, कोनसीवास, काठूवास, बिठवाना, कमालपुर, गुजरीवास, भंवाड़ी, जलियावास, करनावास, देवलावास, ढालियावास, चांदपुर, गुज्जीवास, छुरियावास, निगांनियावास, रामपुरा, डालियाकी, नैनसुखपुरा, बिहारीपुर, शाहबाजपुर और पदेयावास गांवों के किसानों के लिए खरीद शेड्यूल रहेगा।

▶▶ **17 अक्तूबर** शनिवार को डोहकी, मुंडलिया, डाबडी, नयागांव, सहारनवास, लाधुवास अहीर, खडगवास, बंगडवा, भिठेडा, नैचाना, बालावास जाट, चिमनावास, टांकड़ी, सुल्खा, जाट सायरवास, टहना, मस्तापुर, शादीपुर, राजावास, नूरपुर, रायपुर, खेडा मुरार और पनवाड़ गांवों के किसान अपनी फसल मंडी में ला सकेंगे।

शेड्यूल के अनुसार ही लाएं फसल

मार्केट कमेटी ने किसानों से अपील की है कि वे जारी शेड्यूल के अनुसार ही अपनी फसल मंडी में लेकर आएं, ताकि खरीद प्रक्रिया सुचारू रूप से चल सके और उन्हें अनावश्यक परेशानी का सामना न करना पड़े।

मकान व किराये के कमरे में चोरी की दो वारदातें सुलझी, एक आरोपी काबू

- नकदी, सोने-चांदी के जेवरात और 32 बोर लाइसेंसी रिवाल्वर मय जिंदा कारतूस बरामद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

धारूहेड़ा थाना पुलिस ने क्षेत्र में हुई चोरी की दो बड़ी वारदातों का खुलासा करने में सफलता हासिल की है। पुलिस ने महज कुछ ही घंटों के भीतर वारदात में संलिप्त मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी के कब्जे से दोनों मामलों में चुराए गए 6 मोबाइल फोन, 88 हजार 500 रुपये की नकदी, सोने-चांदी के आभूषण, चांदी के सिक्के और एक लाइसेंसी रिवाल्वर मय कारतूस बरामद किया है। एसएचओ धारूहेड़ा फूल कुमार ने बताया की गत 8 अक्टूबर को राम नगर, बास रोड, धारूहेड़ा निवासी परमजीत ने पुलिस को दी शिकायत में बताया था कि चोर उनके घर के कमरे का ताला तोड़कर अलमारी में रखे 1 लाख रुपये नकद, सोने-चांदी के जेवरात, चांदी के सिक्के और स्कूल बैग चोरी कर ले गया हैं। सीसीटीवी फुटेज खंगालने पर एक संदिग्ध लड़का बैग ले जाते हुए दिखाई दे रहा था। इसी दिन जींद के गतोली हाल किराएदार चांद कॉलोनी बास रोड निवासी संदीप ने पुलिस को दी शिकायत में बताया था कि गत 7 अक्टूबर को कमरा बंद कर गया था।



रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्त में आरोपी व बरामद सामान। फोटो : हरिभूमि

टीमें गठित की गई थी

मामलों की गंभीरता को देखते हुए पुलिस टीमों का गठन किया गया। पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए दोनों वारदातों को अंजाम देने वाले आरोपी अंकित कश्यप गांव मंदुसारा मऊ यूपी हाल किरायेदार सैयद कॉलोनी धारूहेड़ा को वारदात के कुछ ही घंटों के भीतर गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने आरोपी को अदालत में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

डिजिटल युग में मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने पर आईजीयू मीरपुर में कार्यशाला

अधिक स्क्रीन टाइम से तनाव और बेचैनी बढ़ने की आशंका

विद्यार्थियों को शिक्षकों से समस्याएं साझा करने के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| मीरपुर

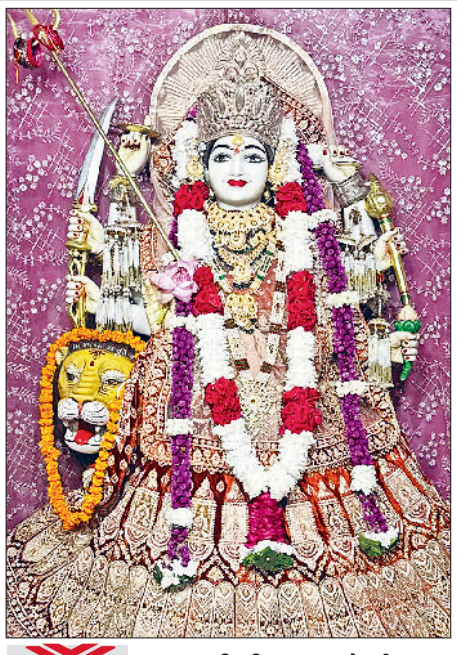
इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय में विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर मनोविज्ञान विभाग की ओर से महिला प्रकोष्ठ एवं महाराजा अग्रसेन चेयर के सहयोग से डिजिटल युग में मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाना विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. दिलबाग सिंह ने की। हार्टफुलनेस इंस्टीट्यूट से डा. अतुल कुमार एवं डा. रुचिका यादव ने मुख्य वक्ता के रूप में शिरकत की। मनोविज्ञान विभाग की अध्यक्ष एवं संज्ञानात्मक एवं व्यवहार विज्ञान संकाय की अधिष्ठाता डा. मंजू पुरी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। इस मौके पर कुलसचिव प्रो. दिलबाग सिंह ने कहा कि आज के डिजिटल युग में मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर अवसर उपलब्ध करा रहा है, जिनका विद्यार्थियों को लाभ उठाना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित किया कि वे अपनी समस्याओं एवं चिंताओं को बिना किसी संकोच के अपने शिक्षकों के साथ साझा करें। डा. अतुल कुमार ने मोबाइल फोन एवं सोशल मीडिया के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले बढ़ते प्रभाव की ओर विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने बताया कि मोबाइल पर लगातार आने वाले नोटिफिकेशन और अत्यधिक स्क्रीन टाइम मस्तिष्क को निरंतर सतर्क अवस्था में रखते हैं, जिससे तनाव एवं बेचैनी बढ़ सकती है।



रेवाड़ी। कार्यशाला में विद्यार्थियों को जानकारी देते वक्ता। फोटो : हरिभूमि

व्यावहारिक गतिविधियों में शामिल किया

डा. रुचिका यादव ने विद्यार्थियों को विभिन्न व्यावहारिक गतिविधियों में शामिल किया। दोनों संसाधन व्यक्तियों ने ध्यान एवं मेडिटेशन के अभ्यास कराए। इस अवसर पर महिला प्रकोष्ठ की संयोजक डा. रश्मि पुंडीर, डा. रोमिका बत्रा, डा. बिजेंद्र, डा. कविता, डा. बीरेंद्र, डा. अमनदीप, डा. अर्चना, डा. पूनम व डा. सतीश कुमार सहित विभिन्न विभागों के अध्यक्ष व प्राध्यापक उपस्थित रहे। मनोविज्ञान विभाग के सहायक प्राध्यापक डा. संदीप ने सभी का आभार जताया। मंच संचालन कनक व पारुल यादव ने किया।



उपासक पूरे विधि-विधान से कलश की स्थापना करेंगे

नवरात्र आज से, जगमग हुए मंदिर पहले दिन मां शैलपुत्री की होगी पूजा





रेवाड़ी। नवरात्र पर लाइटों से जगमग बारा हजारी दुर्गा मंदिर तथा पुरानी सब्जीमंडी में नवरात्र की पूजन सामग्री खरीदते श्रद्धालु। फोटो : हरिभूमि

नौ दिन मां दुर्गा के स्वरुपों की पूजा-अर्चना होगी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

आश्विन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ होने वाले शारदीय नवरात्र 11 अक्टूबर से 19 अक्टूबर तक श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ मनाए जाएंगे। 19 अक्टूबर को महानवमी तथा 20 अक्टूबर को विजयादशमी का पावन पर्व मनाया जाएगा। भारतीय सनातन परम्परा में नवरात्र को भगवती आद्याशक्ति की आराधना, गहन साधना और आत्मशुद्धि का विशेष काल माना गया है। इस बार मां हाथी पर सवार होकर आ रही हैं। नवरात्र के प्रथम दिन उपासक पूरे विधि-विधान से कलश की स्थापना करेंगे। कलश स्थापना के बाद नौ दिन मां दुर्गा के स्वरुपों की पूजा-अर्चना होगी। ज्योतिषाचार्य डा. अजय शास्त्री का कहना है कि स्नान ध्यान करके देवी दुर्गा, भगवान गणेश, नवग्रह, कुबेर आदि की मूर्ति के साथ कलश की स्थापना करनी चाहिए। कलश के ऊपर रोली से ओउम और स्वस्तिक लिखा जाना चाहिए। कलश स्थापना के समय पूजा गृह में पृथ्वी पर 7 प्रकार के अनाज रखे जाने चाहिए। कलश में गंगाजल, लौंग, ईलायची, पान, सुपारी, रोली, कलावा, चंदन, अक्षत, हल्दी व पुष्प आदि डाले जाने चाहिए। 7 अनाजों सहित रेत के ऊपर कलश की स्थापना की जानी चाहिए। जौ अथवा कच्चा चावल और कटोरे में भरकर कलश के ऊपर भरकर रखा जाना चाहिए। चुन्नी से लिपटा हुआ नारियल कलश के ऊपर रखना चाहिए।

मां की पूजा करने से मिलता है मन वांछित फल

प्रथम नवरात्रे पर उपासक मां दुर्गा के प्रथम स्वरुप मां शैलपुत्री की पूरे विधि विधान के अनुसार उपासना करेंगे व मां दुर्गा के व्रत भी रखेंगे। धार्मिक ग्रंथों में उल्लेख है कि जो उपासक मां भगवती दुर्गा की शरण में आ जाते हैं, उनका कभी कोई अमंगल नहीं होता। मां दुर्गा की शक्तियां विषम परिस्थितियों में भी अपने उपासकों की रक्षा करती है। शैलराज हिमालय की पुत्री के रूप में जन्मी मां दुर्गा के प्रथम रुप का नाम शैलपुत्री है। मां शैलपुत्री पार्वती और हेमवती नामों से भी जानी जाती हैं। मां का वाहन वृषभ है और इनके दाएं हाथ में त्रिशूल और बाएं हाथ में कमल का फूल है। मां भगवती की विशेष कृपा प्राप्ति के लिए षोडशोपचार पूजन के बाद नियमानुसार उपासकों को गाय का घृत मां को अर्पित करना चाहिए और फिर वह घृत ब्राह्मण को दे देना चाहिए। मां शैलपुत्री की पूजा करने से कभी रोग नहीं होते। मां की पूजा अर्चना करने से मनवांछित फल मिलता है।

19 अक्टूबर को महानवमी तथा 20 अक्टूबर को मनाया जाएगा विजयादशमी का पर्व

श्रद्धालुओं ने जमकर की खरीदारी

शारदीय नवरात्र की पूर्व संध्या पर शहर के मोती चौक बाजार, गुड बाजार व पैठ बाजार सहित शॉपिंग कॉम्पलैक्स में पूजन सामग्री तथा खाद्य सामग्री खरीदने वाले श्रद्धालुओं की भीड़ रही। शहर के मुख्य मोती चौक बाजार में सामान खरीदने वालों की ज्यादा भीड़ दिखाई दी। दुकानों पर जहां मां दुर्गा की पूजा में इस्तेमाल होने वाली सामग्री की बिक्री हो रही है। महंगाई का असर मां दुर्गा के नवरात्रों पर भी पड़ता दिखाई दे रहा है। जहां पूजन सामग्री महंगी हो गई है, वहीं व्रत के दौरान इस्तेमाल होने वाले कुट्टू और सिंघाड़े के आटे के दामों में गत वर्ष की अपेक्षा 30 प्रतिशत की बढ़ोतरी हो गई है। फलों के दामों में भी महंगाई का असर दिखाई देने लगा है। आलू के दाम भी 40 रुपये प्रति किलोग्राम तक पहुंच गए है। नवरात्रों पर मां दुर्गा की पूजा के लिए कलाकारों ने मूर्तियां भी बनाई हैं। राजस्थान से आए कलाकारों ने माता की विभिन्न स्वरुपों की मूर्तियां बनाई हैं। मूर्तियों की खूब बिक्री हो रही है।

अनुष्ठान के प्रारंभ में लिया जाने वाला संकल्प अत्यंत महत्वपूर्ण



ज्योतिषाचार्य डा. अजय शास्त्री ने बताया कि अनुष्ठान के प्रारंभ में लिया जाने वाला संकल्प अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसमें साधक का नाम, गोत्र, विशिष्ट उद्देश्य तथा अनुष्ठान की निश्चित अवधि का स्पष्ट निर्धारण होना चाहिए। यही संकल्प इस साधना-विधान को व्यक्तिगत और उद्देश्यपूर्ण बनाता है। नवरात्र के नौ दिनों में पूर्ण नियम, आंतरिक संयम, सात्त्विक आहार-विहार, देवीमाहात्म्य का श्रद्धापूर्वक पाठ, मन्त्र-जप, विधि विधान से हवन एवं यथाशक्ति कन्या-पूजन करने की सनातन परम्परा है। 19 अक्टूबर को महानवमी के पावन अवसर पर विशेष देवी-पूजन, दुर्गासप्तशती पाठ की पूर्णाहुति एवं हवन का विशेष महत्व रहेगा।

ज्योतिषाचार्य का कहना है कि शारदीय नवरात्र में देवी तामस स्वरुप में आती हैं, जोकि उग्र होता है। इसलिए उनकी आराधना में भूल या अनदेखी से बचना चाहिए। नवरात्रों के दौरान स्वच्छता व पवित्रता का ध्यान रखा जाना चाहिए, कलह आदि नहीं करनी चाहिए, मां दुर्गा को तीव्र ध्वनि पसंद नहीं है।



रेवाड़ी। कार्यक्रम में छात्राओं को जानकारी देते हुए डा. ज्योति। फोटो : हरिभूमि

उचित प्रबंधन और सकारात्मक सोच के माध्यम से तनाव को प्रभावी ढंग से निपटा जा सकता

■ स्वस्थ मन ही सुखी और संतुलित जीवन का आधार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

सेक्टर-18 स्थित राजकीय कन्या महाविद्यालय में महिला प्रकोष्ठ, हेल्थ एवं वेलनेस सेंटर व मनोविज्ञान विभाग के तत्वावधान में विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष्य में सात दिवसीय कार्यक्रम के दौरान शनिवार को राष्ट्रीय स्वास्थ्य दिवस मनाया गया। महिला प्रकोष्ठ प्रभारी डा. सुचेता कौशिक ने सात दिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। महाविद्यालय की प्राचार्या डा.ज्योति यादव ने मानसिक स्वास्थ्य और तनाव प्रबंधन के महत्व पर प्रकाश डाला।

उन्होंने सभी से तनाव के कारणों को समझने तथा अपने मानसिक स्वास्थ्य के लिए प्रतिदिन कम से कम दस मिनट स्वयं को देने का आग्रह किया। प्राचार्या ने कहा कि आज की व्यस्त जीवनशैली में तनाव एक सामान्य समस्या बन गया है, लेकिन उचित प्रबंधन और सकारात्मक सोच के माध्यम से इससे प्रभावी ढंग से निपटा जा सकता है। उन्होंने सुझाव दिया कि प्रत्येक व्यक्ति रात में सोने से पहले 10 मिनट का समय स्वयं के लिए निकाले और दिनभर की चिंताओं एवं तनाव से मुक्त होने का प्रयास करें। इस दौरान ध्यान, गहरी सांस लेने का अभ्यास तथा आत्म-चिंतन मानसिक शांति प्रदान करने में सहायक हो सकते हैं।

उन्होंने छात्राओं एवं स्टाफ सदस्यों को मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने, सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने और स्वयं की भावनात्मक सेहत का ध्यान रखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस को हैप्पी हेल्थ डे के रूप में मनाने का संदेश देते हुए कहा कि स्वस्थ मन ही सुखी और संतुलित जीवन का आधार है।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर डा. यशपाल, डा. रीना, नरेन्द्र, पंकज कालरा, डा. रितु, डा. सुनीता, डा. स्वाति, डा. रजनी, डा. सुनील, संदीप, राजकुमार व डा. दीपक व अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

न्यूज डायरी



बच्चों को वितरित की खाद्य सामग्री

रेवाड़ी। अग्रवाल वैश्य समाज की टीम ने अग्रसेन जयंती के उपलक्ष्य में एस एन झुग्गी झोपड़ी स्कूल सेक्टर-4 में बच्चों को स्नैक्स और फल वितरित किए। अग्रवाल वैश्य समाज के जिला अध्यक्ष नवीन सिंघल ने कहा कि महाराजा अग्रसेन ने हमेशा समाज के लोगों के लिए अच्छे कार्य किए, चाहे वो मंदिर बनवाना हो, धर्मशाला बनवानी हो जरूरतमंद की मदद करनी हो। अग्रवाल वैश्य समाज भी उन्हीं के पद चिन्हों पर चलते हुए समाज सेवा के कार्य कर रहा है। इस मौके पर अग्रवाल वैश्य समाज के रेवाड़ी विधानसभा अध्यक्ष केसरी नंदन अग्रवाल, जिला महिला अध्यक्ष सुनीता अग्रवाल, जिला महिला महासचिव यशोदा बंसल, विधानसभा महिला अध्यक्ष रेखा अग्रवाल, विधानसभा महिला महासचिव अंजू अग्रवाल, अमन अग्रवाल, स्कूल के डायरेक्टर नरेंद्र गुगनानी, अध्यापिका नीलम गुप्ता, मोहिनी तथा वंदना गुप्ता मौजूद थे।



सरकार किसानों के हितों के प्रति प्रतिबद्ध

रेवाड़ी। बावल के विधायक डा. कृष्ण कुमार ने शनिवार को कार्यालय में ग्रामीणों की समस्याएं सुनते हुए मौके पर अधिकारियों को समाधान करने के निर्देश दिए। विधायक ने कहा कि हरियाणा सरकार किसानों के हितों के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में हरियाणा सरकार अंत्योदय की भावना से बिना भेदभाव के तेजी से विकास कार्य करा रही है और जनकल्याणकारी योजनाएं लागू कर पात्र लोगों को लाभ पहुंचाने का कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि अधिकारी आमजन की शिकायतों का प्राथमिकता से समाधान कराएं, ताकि उन्हें अपनी समस्याओं को लेकर बार-बार कार्यालयों के चक्कर न काटने पड़े। इस अवसर पर काफी संख्या में लोग मौजूद रहे।



सुमेर सिंह बने कंप्यूटर लैब सहायक संघ के प्रधान

रेवाड़ी। शनिवार को कंप्यूटर लैब सहायक संघ की बैठक नेहरू पार्क में आयोजित की गई। मीटिंग में जिला इकाई के चुनाव संपन्न कराए गए। बावल ब्लॉक के प्रधान सुमेर सिंह को पिछले ब्लॉक प्रधान के कार्यकाल को देखते हुए सर्वसम्मति से जिला प्रधान के योग्य घोषित किया और अमित को रोहड़ाई जिला उपप्रधान बनाया गया। मीटिंग में पूर्व जिला प्रधान पवन कुमार, ओमपाल ढिल्लों, कुलदीप सिंह, मनमोहित, सुरेन्द्र, प्रदीप, रवि, नरेंद्र, ललित कुमार, हेमंत कुमार, प्रवीण रंगा, सतपाल शर्मा, योगेश यादव, कृष्ण यादव, कंचन जांगिड़ व विक्रम सिंह मौजूद रहे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला कच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 8291554800

कोसली मंडी में 700 गेट पास काटे, देर शाम तक 19 हजार क्विंटल बाजरे की आवक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कोसली



रेवाड़ी। मंडी के बाहर लगी बाजरे के ट्रैक्टर ट्रालियों की कतार। फोटो : हरिभूमि

कोसली अनाजमंडी में बाजरे की भारी आवक हो रही है। शनिवार को मंडी में बाजरा की बिक्री के लिए आ रहे किसानों के ट्रैक्टरों की डेढ़ किलोमीटर तक कतार लग गई। शनिवार को मंडी में 700 गेट पास जारी किए गए तथा देर शाम तक 19000 क्विंटल बाजरे की आवक हो चुकी। खुले में बाजरे का भाव 2250 रुपये प्रति क्विंटल से 2340 रुपये प्रति क्विंटल पहुंच जाने से किसान मंडी में अपनी फसल लाने के लिए बेताब है। प्रदेश सरकार की ओर से भावांतर के 600 रुपये किसानों के खाते में डाले जाएंगे। सरकार ने कोसली मंडी के लिए हैफेड को बाजरे की खरीद के लिए अधिकृत किया था, लेकिन हैफेड गुणवत्ता मानकों के कारण अभी तक खरीद शुरू नहीं कर सकी है। खुले बाजार में भाव सरकारी रेट के आसपास हो जाने से किसान आढ़तियों को वरीयता दे रहा है। मार्केट कमेटी के सचिव विकास कुमार ने बताया कि शुक्रवार शाम तक 128324 क्विंटल बाजरे की मंडी में आवक हुई, जिसमें से 95820 क्विंटल बाजरे की खरीद आढतियों द्वारा की जा चुकी थी। शनिवार को मंडी में 700 गेट पास जारी किए गए तथा देर शाम तक 19000 क्विंटल बाजरे की आवक हो चुकी थी।

सैनिक स्कूल के 32 कैडेट्स ने एनडीए की लिखित परीक्षा उत्तीर्ण कर बढ़ाया गौरव

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी



रेवाड़ी। एडीएम परीक्षा में उत्तीर्ण कैडेट्स शिक्षकों के साथ। फोटो : हरिभूमि

गांव गोठड़ा अहीर सैनिक स्कूल के 32 कैडेट्स ने राष्ट्रीय रक्षा अकादमी की लिखित परीक्षा उत्तीर्ण कर विद्यालय का नाम रोशन किया है। यह सफलता कैडेट्स की कड़ी मेहनत, अनुशासन, दृढ़ संकल्प एवं निरंतर प्रयासों का परिणाम है। विद्यालय प्राचार्य कैप्टन (भारतीय नौसेना) ब्रिज किशोर ने परीक्षा में सफल सभी 32 कैडेट्स को बधाई दी। उन्होंने कैडेट्स की मेहनत, लगन एवं समर्पण की सराहना करते हुए इस सफलता में योगदान देने वाले समर्पित शैक्षणिक स्टाफ के प्रयासों की भी प्रशंसा की। प्राचार्य ने सफल कैडेट्स को आगामी एसएसबी साक्षात्कार के लिए शुभकामनाएं देते हुए विश्वास व्यक्त किया कि वे आगामी चयन प्रक्रिया में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करेंगे तथा भारतीय सशस्त्र सेनाओं में अधिकारी बनकर राष्ट्रसेवा के अपने लक्ष्य को साकार करेंगे। प्राचार्य, प्रशासनिक अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल जय सिंह राठौड़, उप प्राचार्या स्क्वाड्रन लीडर वंदना चौधरी व कार्यवाहक वरिष्ठ अध्यापक विपिन शर्मा सहित समस्त स्टाफ ने उत्तीर्ण कैडेट्स के उज्जवल भविष्य की कामना की।

पंजाबी भवन प्रबंध कार्यकारिणी के चुनाव 22 नवंबर को, शेड्यूल जारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

पंजाबी भवन की प्रबंधकारिणी के चुनाव 22 नवंबर को पंजाबी भवन में होंगे। चुनाव के लिए जिला रजिस्ट्रार, फर्म्स एवं सोसायटीज की ओर से सतीश कुमार जोशी को निर्वाचन अधिकारी नियुक्त किया गया है। निर्वाचन अधिकारी सतीश कुमार जोशी ने बताया कि चुनाव कार्यक्रम एवं मतदाता सूची जारी कर दी गई है। मतदाता सूची पर 25 अक्टूबर तक आपत्तियां दी जा सकती हैं, जिनका निपटारा कर 5 नवंबर को अंतिम मतदाता सूची जारी की जाएगी। 10 नवंबर से नामांकन प्रक्रिया शुरू होगी तथा 22 नवंबर को आवश्यकता पड़ने पर मतदान एवं मतगणना कर परिणाम घोषित किए जाएंगे। जोशी ने कहा कि चुनाव प्रक्रिया पूरी तरह निष्पक्ष, पारदर्शी एवं नियमानुसार संपन्न कराई जाएगी। एडवोकेट सचिन मलिक ने कहा कि सामाजिक संस्थाओं का संचालन लोकतांत्रिक मूल्यों, पारदर्शिता और सभी सदस्यों की सामूहिक भागीदारी से होना चाहिए। संस्था किसी एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि सभी सदस्यों की होती है। नियमित एवं निष्पक्ष चुनाव संस्था को मजबूती प्रदान करते हैं और सदस्यों का विश्वास बढ़ाते हैं।



राज्य स्तरीय हिंदी व्याकरण ओलंपियाड में 53 विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

रेवाड़ी। दिल्ली रोड पुलिस लाइन स्थित डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल में राष्ट्रीय शिक्षा समिति टोहाना फतेहाबाद की ओर से राज्य स्तरीय हिंदी व्याकरण प्रतियोगिता हरियाणा गौरव पुरस्कार के अंतर्गत हिंदी व्याकरण ओलंपियाड का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों में भाषाई दक्षता, व्याकरण संबंधी ज्ञान एवं मानसिक प्रतिभा को विकसित करने के उद्देश्य से आयोजित प्रतियोगिता में कक्षा तीसरी से दसवीं तक के 53 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी हिंदी भाषा संबंधी समझ, व्याकरणिक ज्ञान एवं बौद्धिक क्षमताओं का प्रदर्शन करने का अवसर मिला। प्रधानाचार्य ने कहा कि इस प्रकार की शैक्षणिक प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि जागृत करने, शुद्ध भाषा-प्रयोग को प्रोत्साहित करने तथा आत्मविश्वास एवं स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास एवं शैक्षणिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए सदैव प्रतिबद्ध है।

अनुसूचित जाति के व्यक्तियों को ऋण के लिए आवेदन आमंत्रित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

हरियाणा अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम की ओर से अनुसूचित जाति के बेरोजगार व्यक्तियों को स्वरोजगार स्थापित करने के उद्देश्य से विभिन्न ऋण योजनाओं के तहत आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। ऋण आवेदन करने की अंतिम तिथि 31 दिसंबर निर्धारित की गई है। एडीसी राहुल मोदी ने बताया कि इन योजनाओं के माध्यम से पात्र व्यक्तियों को विभिन्न आय अर्जित करने वाली गतिविधियां शुरू करने के लिए 2 लाख रुपए तक का ऋण उपलब्ध कराया जाएगा। उन्होंने बताया कि हरियाणा अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम की योजनाओं का लाभ लेने के लिए आवेदक की परिवार पहचान पत्र के अनुसार वार्षिक पारिवारिक आय 3 लाख रुपए तक होनी चाहिए। एडीसी ने बताया कि बैंक टाइअप स्कीम के तहत अधिकतम 1 लाख 50 हजार रुपए, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम की सूक्ष्म वित्त योजना के तहत अधिकतम 1 लाख रुपए तथा सावधि ऋण योजना के तहत अधिकतम 2 लाख रुपए तक का ऋण विभिन्न स्वरोजगार गतिविधियों के लिए उपलब्ध कराया जाएगा।

अभियान फसल लाने वाले किसानों और श्रमिकों को मुफ्त दंत उपचार की सुविधा

किसानों ने दिल खोलकर स्वास्थ्य मंत्री की पहल का किया स्वागत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी/कोसली

भाजपा के 'सेवा संकल्प' अभियान को आगे बढ़ाते हुए प्रदेश की स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने अनूठी पहल शुरू की है। इसके तहत दंत रोग विशेषज्ञों की टीम मोबाइल वैन के साथ अनाजमंडियों में जाकर फसल लाने वाले किसानों और श्रमिकों के साथ-साथ व्यापारियों के दांतों का भी मुफ्त इलाज कर रही है। सैकड़ों किसानों को अभी तक इस सुविधा का लाभ मिल चुका है। किसान भी दिल खोलकर स्वास्थ्य मंत्री की इस पहल का स्वागत कर रहे हैं।

सैकड़ों किसानों को अभी तक इस सुविधा का लाभ मिल चुका

खेतों में दिनभर पसीना बहाने वाला किसान हो या अनाज की बोरियां उठाकर परिवार का गुजारा करने वाला मजदूर, दोनों के लिए समय पर इलाज कराना अक्सर बड़ी चुनौती बन जाता है। फसल की कटाई से लेकर मंडी में अनाज बेचने तक की भागदौड़ में छोटी-मोटी बीमारियां भी कई बार नजरअंदाज हो जाती हैं। दांतों में दर्द हो या मसूड़ों की परेशानी, लोग कामकाज के चलते उपचार टालते रहते हैं। ऐसे में प्रदेश की स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव की पहल पर अनाज मंडियों में ही दंत चिकित्सा की सुविधा पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। इस साल आरती सिंह राव ने स्वास्थ्य मंत्री के रूप में नई पहल की है। इस पहल के तहत दंत रोग विशेषज्ञों की टीम मोबाइल वैन के साथ अनाज मंडियों में पहुंच रही है। यहां किसानों, मजदूरों और अन्य जरूरतमंद लोगों के दांतों की जांच कर उन्हें उपचार उपलब्ध कराया जा रहा है।



रेवाड़ी। कोसली अनाजमंडी कैंप में लोगों को जानकारी देते हुए। फोटो : हरिभूमि

शनिवार को कोसली अनाज मंडी में विशेषज्ञों की टीम ने पहुंचकर मरीजों की जांच की। एजीटी यूनिवर्सिटी गुरुग्राम के विशेषज्ञ इस अभियान के तहत दांतों से जुड़ी समस्याओं की पहचान और उपचार में जुटे हैं। दांतों में लगातार दर्द, मसूड़ों से खून आना और अन्य परेशानियों को सामान्य मानकर टालना आगे चलकर गंभीर समस्या का कारण बन सकता है। मंडियों में विशेषज्ञों की मौजूदगी से लोगों को अपनी परेशानी बताने और समय पर चिकित्सकीय सलाह लेने का अवसर मिल रहा है।

लोगों को विशेष सहूलियत मिल रही

स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लेने के लिए लोगों को अस्पताल तक पहुंचने के बजाय स्वास्थ्य सेवाओं को लोगों के नजदीक उपलब्ध कराने की सोच इस अभियान का प्रमुख आधार है। मंडियों में मोबाइल वैन के जरिए दंत चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने से उन लोगों को विशेष सहूलियत मिल रही है, जो रोजी-रोटी की व्यस्तता के कारण इलाज के लिए समय नहीं निकाल पाते।

कोसली अनाजमंडी में पहुंची टीम

इसी कड़ी में शनिवार को हरियाणा राज्य कृषि विपणन बोर्ड के जिला विपणन प्रवर्तन अधिकारी विनय यादव की देखरेख में कोसली अनाजमंडी में डा. रंगोली व डा. निवोदिता की टीमन ने शिविर लगाकर मंडी में आने वाले किसानों के दांतों की जांच की। शिविर में 200 से अधिक किसानों, मजदूरी और व्यापारियों ने दांतों की जांच कराई। टीम ऑपरेशन को छोड़कर दांतों की सभी बीमारियों का इलाज कर रही है।

किसानों को मिल रहा फायदा



स्वास्थ्य मंत्री की इस पहल को किसान सराहना कर रहे हैं। मंडियों में ऐसी सुविधाएं मिलने से यह संदेश भी जा रहा है कि किसानों के लिए स्वास्थ्य की देखभाल भी जरूरी है। किसान-मजदूर अक्सर अपनी मेहनत और जिम्मेदारियों के बीच स्वास्थ्य को पीछे छोड़ देते हैं। मंडी में जांच और उपचार की सुविधा राहत का माध्यम बन रहा है। -विनय यादव, जिला विपणन प्रवर्तन अधिकारी।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 11 अक्टूबर 2026

संस्कृति-आस्था का उल्लास
नवरात्रों के बहुरंगी उत्सव


बंगाल की पारंपरिक दुर्गा पूजा


गुजरात में नवरात्र का महत्वपूर्ण अंग-डांडिया


ओडिशा के कटक में 'चांदी मेधा' से सजी मां दुर्गा की प्रतिमा


उत्तर भारत में नवरात्र के दौरान होता है रामलीला का आयोजन

शारदीय नवरात्र विशेष

भारत के विभिन्न स्थानों में नवरात्र मनाने के अलग-अलग तरीके हैं। ये इस बात के प्रमाण हैं कि हमारी संस्कृति कितनी समृद्ध और विविधतापूर्ण है। बंगाल की कलात्मकता, गुजरात का नृत्य, दक्षिण का गोलू और मैसूर का राजसी वैभव, सब मिलकर एक ही सनातन शक्ति की आराधना करते हैं। यह विविधता ही हमारे देश की असली पहचान और सुंदरता है। आइए भारत के विभिन्न राज्यों में नवरात्रों और दुर्गा पूजा के अनूठे और मनमोहक स्वरूपों पर एक नजर डालते हैं।

आवरण कथा
शिखर चंद जैन

विविधता में एकता का महापर्व नवरात्रों में होने वाली दुर्गा पूजा, भारत के सबसे बड़े और उल्लासपूर्ण त्योहारों में से एक है। यह केवल मां शक्ति की आराधना का पर्व नहीं है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक विविधता, धार्मिक, सामाजिक समरसता और उल्लास का भी जीवंत अवसर है। यद्यपि इस उत्सव का मूल भाव महिषासुर मर्दिनी मां दुर्गा की आसुरी शक्तियों पर विजय का उत्सव मनाना है, लेकिन देश के अलग-अलग राज्यों में इसे मनाने की शैलियां, परंपराएं और सांस्कृतिक रंग पूरी तरह भिन्न हैं।

बंगाल में दिखता है परंपरा-संस्कृति का संगम

पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा का रूप सबसे अधिक व्यापक, भव्य और पारंपरिक होता है। यहां यह उत्सव केवल पांच दिनों का नहीं, बल्कि पूरे साल की तैयारी का परिणाम होता है। पारंपरिक बंगाली घरों और पुराने अभिजात्य परिवारों (राजबाड़ी की पूजा) में आज भी मां दुर्गा की 'एकचाला' (एक ही अर्द्धवृत्त फ्रेम में सभी देवताओं की मूर्तियां) प्रतिमा स्थापित की जाती है। कोलकाता और अन्य शहरों में समकालीन कला, सामाजिक संदेशों या प्राचीन मंदिरों की प्रतिकृतियों पर आधारित विशाल पंडाल बनाए जाते हैं, जिन्हें देखने के लिए देश-विदेश से लोग आते हैं। महाष्टमी के दिन नौ वर्ष से कम आयु की कन्याओं को मां दुर्गा का स्वरूप मानकर उनकी विशेष पूजा की जाती है, जो नारी शक्ति के प्रति सम्मान का प्रतीक है। धुनुची (धूप और नारियल के छिलकों से सुलगता पात्र) के साथ किया जाने वाला ऊर्जावान धुनुची नृत्य यहां का मुख्य आकर्षण है। वहीं, विजया दशमी के दिन विवाहित महिलाएं मां को सिंदूर अर्पित करने के बाद आपस में सिंदूर लगाकर सुखद भविष्य की कामना करती हैं।


महाराष्ट्र में नवरात्र के दौरान 'भोंडाला' खेलती महिलाएं

ओडिशा-असम में शक्तिपीठों की आराधना

पूर्वी भारत के राज्यों ओडिशा और असम में दुर्गा पूजा का अपना ही विशिष्ट और प्राचीन स्वरूप देखने को मिलता है। ओडिशा के कटक शहर में दुर्गा पूजा के दौरान मां की मूर्तियों के पीछे शुद्ध चांदी के कलात्मक मुकुट और झांकियां बनाई जाती हैं, जिन्हें 'चांदी मेधा' कहा जाता है। यहां का विसर्जन जुलूस अपनी भव्यता और संगीत आयोजन के लिए प्रसिद्ध है। जबकि असम में कामाख्या मंदिर और शक्तिपीठों के प्रभाव के कारण यहां मां दुर्गा की पूजा तांत्रिक और पारंपरिक विधि-विधान से की जाती है। यहां 'अंजली' और 'महाप्रसाद' वितरण का विशेष महत्व होता है।

गुजरात में होता है आयोजित गरबा-डांडिया का महाउत्सव

गुजरात में नवरात्रों में मां अंबा और मां दुर्गा की आराधना नृत्य और संगीत के माध्यम से की जाती है। नवरात्रों में युवक-युवतियां पारंपरिक परिधानों में सजकर मां की ज्योत (गरबी) के चारों ओर तालियों और लोकगीतों के साथ गरबा और डांडिया खेलते हैं। यह आयोजन केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक मेल-मिलाप का सबसे बड़ा मंच बन जाता है, जहां युवा से लेकर बुजुर्ग तक पूरी ऊर्जा के साथ शामिल होते हैं।

महाराष्ट्र में होती है घटस्थापना और शस्त्र पूजा

महाराष्ट्र में नवरात्र और विजया दशमी का पर्व लोकमान्य तिलक द्वारा पुनर्जीवित सार्वजनिक गणेशोत्सव की तरह ही सामाजिक सहभागिता के साथ मनाया जाता है। अश्विन प्रतिपदा के दिन घरों में कलश स्थापना (घटस्थापना) और नौ दिनों तक अखंड दीप प्रज्वलित करने की परंपरा है। महाराष्ट्र में महिलाओं और विशेषकर युवतियों के लिए 'भोंडला' या 'हदस्तोत्सव' खेलने की अनूठी परंपरा है, जिसमें हाथी के चारों ओर घेरा बनाकर लोकगीत गाए जाते हैं। विजया दशमी के दिन यहां शमी के पत्तों (जिसे स्वर्ण माना जाता है) को एक-दूसरे को देकर शुभकामनाएं दी जाती हैं। इस अवसर पर औजारों तथा हथियारों की पूजा भी की जाती है।

दक्षिण भारत की शान है बोम्माइ गोलू और शाही दशहरा

दक्षिण भारत (विशेषकर तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश) में दुर्गा पूजा का स्वरूप कला और शाही इतिहास से जुड़ा हुआ है। तमिलनाडु और कर्नाटक में नवरात्र के दौरान घरों में सीढ़ीनुमा रैक बनाकर देवी-देवताओं, पौराणिक कथाओं और जीवन से जुड़ी गुड़ियों (बोम्माइ) को सजाया जाता है। इसे 'गोलू' कहा जाता है' जहां महिलाएं एक-दूसरे के घर जाकर हल्दी-कुमकुम और उपहार का आदान-प्रदान करती हैं। मैसूर पैलेस में मनाया जाने वाला दशहरा पूरी दुनिया में मशहूर है। यहां विजया दशमी के दिन सजे-धजे हाथियों की सवारी निकाली जाती है, जिसमें मां चामुंडेश्वरी की स्वर्ण प्रतिमा को हाथी पर विराजमान कर भव्य जुलूस निकाला जाता है।


दक्षिण भारत में नवरात्र के दौरान बोम्माइ गोलू की सजावट

उत्तर भारत में रामलीलाओं की धूम

उत्तरी भारत में नवरात्रों का समापन रावण दहन और रामलीला के साथ विजया दशमी के रूप में मुख्य रूप से होता है। विशेष तौर पर उत्तर प्रदेश में इस दौरान जगह-जगह रामलीलाओं का आयोजन किया जाता है। प्राचीन काल से चली आ रही इस परंपरा का क्रेज आज भी है। हिमाचल प्रदेश के कुल्लू घाटी में मनाया जाने वाला दशहरा उत्सव बेहद अनूठा है। यहां सात दिनों तक स्थानीय देवी-देवताओं की पालकियों की भव्य रथ यात्रा निकलती है। यह उत्सव तब शुरू होता है, जब देश के बाकी हिस्सों में दशहरा समाप्त हो जाता है। यहां मां दुर्गा के साथ भगवान रघुनाथ की पूजा का मुख्य विधान है। *

सृष्टि का मूल आधार है 'शक्ति'। शक्ति की यह आराधना केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव सभ्यता जितनी ही प्राचीन और वैश्विक है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक मातृ शक्ति को नाम-तरीकों से पूजा जाता रहा है।

दुनिया भर में शक्ति पूजा
स्वरूप-मान्यताएं हैं अलग-अलग

आस्था / अंजू जैन



भारतीय उपमहाद्वीप को शक्ति पूजा का वैश्विक उद्गम केंद्र माना जा सकता है। यहां 'शाक्त संप्रदाय' के अंतर्गत शक्ति को ही सर्वोच्च सत्ता के रूप में पूजा जाता है। भारत में मां दुर्गा, काली, लक्ष्मी और सरस्वती के रूपों में शक्ति का त्रिविध स्वरूप आकर्षण, ऐश्वर्य और ज्ञान पूजनीय है। वर्ष में दो बार आने वाले 'नवरात्रि' के पावन अवसर पर नौ दिनों तक आदिशक्ति के नौ अलग-अलग रूपों (शैलपुत्री से लेकर सिद्धिदात्री तक) की पूजा की जाती है। भारत, नेपाल, बांग्लादेश, पाकिस्तान, तिब्बत और श्रीलंका में फैले 51 शक्तिपीठ शक्ति पूजा के भौगोलिक और आध्यात्मिक विस्तार का सबसे बड़ा प्रमाण हैं। शक्ति पूजा की व्यापकता पूरी दुनिया में प्राचीन काल से आज भी विद्यमान है।

प्राचीन मिस्र में 'आइसिस' और 'सेखमेट' की आराधना: यदि हम प्राचीन वैश्विक सभ्यताओं की ओर रुख करें, तो नील नदी की घाटी (मिस्र) में


मिस्र सभ्यता की देवी 'आइसिस'

शक्ति पूजा का एक बेहद समृद्ध इतिहास मिलता है। मिस्र की सभ्यता में देवी 'आइसिस' को मातृत्व, जादू और जीवन के पुनर्जन्म की परम देवी माना जाता था, जिसकी तुलना भारतीय संस्कृति की मां पार्वती से की जा सकती है। वहीं दूसरी ओर, युद्ध और विनाश की उग्र देवी 'सेखमेट' का स्वरूप भारतीय परंपरा की मां काली से हूबहू मेल खाता है। सिंह के मुख वाली देवी सेखमेट को न्याय और संहार की शक्ति माना जाता था, जो बुरी ताकतों से ब्रह्मांड की रक्षा करती थीं।

ग्रीक (यूनानी) सभ्यता में देवियों का महातम्य: यूनान के प्राचीन दर्शन और पौराणिक कथाओं में भी स्त्री शक्ति को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। ग्रीक पौराणिक कथाओं में देवी 'अथेना' को बुद्धि, ज्ञान और युद्ध की रणनीति की देवी माना गया है, जो मां सरस्वती और मां दुर्गा के मिले-जुले स्वरूप को दर्शाती हैं। इसी प्रकार, प्रकृति, जंगली जीवों और प्रसव की देवी 'आर्टेमिस' और पृथ्वी माता के रूप में पूजी जाने वाली देवी 'डेमेटर' (जिन्हें हम मां शाकंभरी या अन्नपूर्णा कह सकते हैं) की पूजा यूनानी समाज में अनिवार्य रूप से की जाती थी। ओलंपिक खेलों की शुरुआत भी कहीं न कहीं इन शक्तियों के सम्मान से जुड़ी थी।

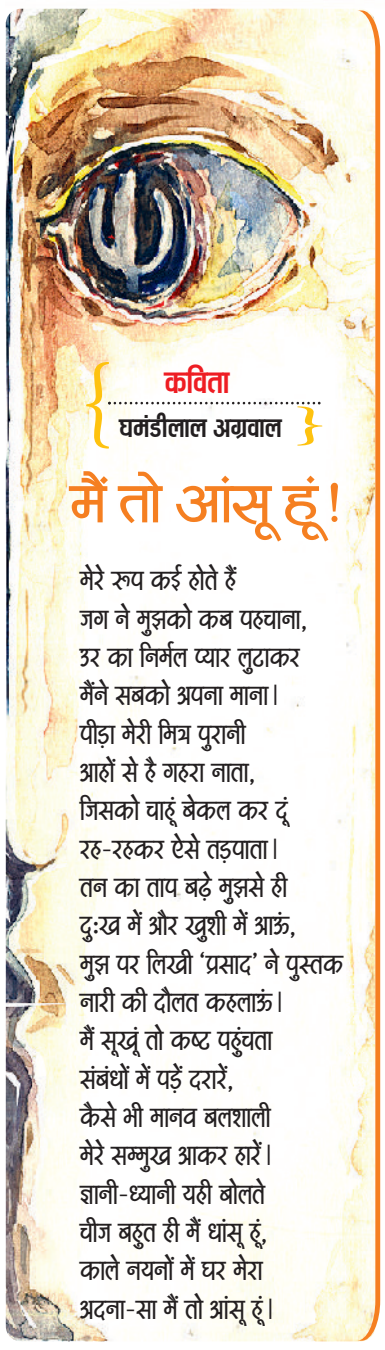
मेसोपोटामिया सभ्यता में प्रेम-युद्ध की देवी इश्तार: दजला और फरात नदियों के किनारे विकसित हुई मेसोपोटामिया (आधुनिक इराक और सीरिया) की प्राचीन सुमेरियन और बेबीलोनियन सभ्यताओं में देवी 'इन्नाना' या 'इश्तार' की पूजा का व्यापक प्रचलन था। इश्तार को प्रेम, सौंदर्य, उर्वरता के साथ-साथ युद्ध की भी देवी माना जाता था। शेर की सवारी करने वाली देवी इश्तार का यह हिंसक और ममतामयी दोहरा स्वरूप बिल्कुल भारतीय सिंहवाहिनी मां दुर्गा जैसा ही है। यह इस बात का ऐतिहासिक साक्ष्य है कि मानव सभ्यता के शुरुआती दौर में भी शक्ति को एक योद्धा और रक्षक के रूप में ही देखा गया।

चीन-जापान में गुआन यिन और अमातेरासु: पूर्वी एशिया की बौद्ध और शिंतो परंपराओं में भी शक्ति पूजा ने अपना स्वरूप बदला लेकिन अपनी मूल भावना को बनाए रखा। चीन में 'गुआन यिन' को करुणा, दया और मातृत्व की देवी के रूप में पूजा जाता है। यद्यपि वे बौद्ध परंपरा से जुड़ी हैं, लेकिन आम जनमानस में उनका स्थान एक रक्षक माता का ही है। वहीं जापान की पारंपरिक शिंतो संस्कृति में


चीन में बौद्ध परंपरा की देवी गुआन यिन

'अमातेरासु' को सूर्य की देवी और संपूर्ण ब्रह्मांड की निर्मात्री माना गया है। जापानी शाही राजवंश स्वयं को सूर्य देवी अमातेरासु का वंशज मानता है, जो यह साबित करता है कि वहां राजसत्ता की शक्ति का स्रोत भी एक महिला देवी ही हैं।

अमेरिका में माया और एज्टेक की प्रकृति पूजा: कोलंबस के अमेरिका पहुंचने से बहुत पहले, वहां की समृद्ध माया और एज्टेक सभ्यताओं में प्रकृति को ही शक्ति का जीवंत रूप मानकर पूजा जाता था। एज्टेक सभ्यता में 'कोटलीक्यू' को जीवन और मृत्यु की देवी, यानी 'धरती माता' के रूप में पूजा जाता था। उनका स्वरूप भी स्कंदमाता और काली के समान उग्र और सृजनात्मक था। वहीं माया सभ्यता में 'इशचेल' को चंद्रमा, चिकित्सा और बुनाई की देवी माना जाता था। इन संस्कृतियों में फसल कटाई के समय मातृ शक्ति को धन्यवाद देने के लिए बड़े उत्सव मनाए जाते थे, जो हमारे यहां की 'नवान्न' या 'लोहड़ी', 'पोंगल' परंपरा जैसी ही है। *



कविता
घमंडीलाल अग्रवाल

मैं तो आंसू हूं!

मेरे रूप कई होते हैं
जग ने मुझको कब पहचाना,
उर का निर्मल प्यार लुटाकर
मैंने सबको अपना माना।
पीड़ा मेरी मित्र पुरानी
आहों से है गहरा नाता,
जिसको चाहूं बेकल कर दूं
रह-रहकर ऐसे तड़पाता।
तन का ताप बढ़े मुझसे ही
दुःख में और खुशी में आऊं,
मुझ पर लिखी 'प्रसाद' ने पुस्तक
नारी की दौलत कहलाऊं।
मैं सूखूं तो कष्ट पहुंचता
संबंधों में पड़ें दरारें,
कैसे भी मानव बलशाली
मेरे सम्मुख आकर हारें।
ज्ञानी-ध्यानी यही बोलते
चीज बहुत ही मैं धांसू हूं,
काले नयनों में घर मेरा
अदना-सा मैं तो आंसू हूं।

व्यंग्य / डॉ. यशोधरा भटनागर

दोस्ती का डेटा पैक



हम बड़े भाग्यशाली समय में जी रहे हैं, जब हमारे पास दोस्तों की कोई कमी नहीं हैं। हमारे इतने दोस्त हैं कि हम खुद भूल जाते हैं कि आखिर हम किसके दोस्त हैं और कौन हमारा? भाग्यशाली समय की हर सुबह अपने दोस्तों से मिलने के साथ शुरुआत होती है और वो भी घर बैठे। मोबाइल उठाया अंगुली से स्क्रीन पर हल्का-सा स्पर्श किया, दोस्ती की दुनिया खुल जाती है। हजारों दोस्त एक साथ कतार में खड़े मिलते हैं। अब पुराने जमाने की तरह चाय पिलाने, हाल-चाल पूछने, या दुःख-सुख बांटने की कोई झंझट नहीं। यहां सब काम लाइक और इमोजी से चल जाता है।

पहले दोस्ती का मतलब था, आप बीमार पड़ें तो कोई दवा ला दे। अब दोस्ती का मतलब है, आप बीमार पड़ें तो सौ लोग लिख दें 'गेट वेल सून।' लिखने वाला इस परम विश्वास से संदेश भेजता है कि यह वाक्य दवा और दुआ से भी ज्यादा प्रभावी तरीके से काम करेगा। लिखने वाले भी निश्चिंत हो जाते हैं कि उसने दोस्ती का फर्ज अदा किया। मोबाइल में इतने 'गेट वेल' बरसते हैं कि बीमारी भी ठिठककर सोचती है। यहां दर्द असली है, या महज रस्म अदायगी है?

अब यह नई संवेदना है, जिसमें आदमी घर से नहीं निकलता, पर भावनाएं पूरी तरह आउटसोर्स कर देता है। भावनाएं डाक से नहीं, डेटा से जाती हैं और कभी-कभी 'डिलीवर' भी नहीं होतीं। इतनी फर्ज अदायगी के बाद अगर मरीज स्वस्थ हो जाए तो ठीक, नहीं तो अगली पोस्ट 'ओम शांति' की तैयारी है। सोशल मीडिया ने दोस्ती को बहुत लोकतांत्रिक बना दिया है। अब आप किसी को जानते हों या न जानते हों, दोस्ती हो सकती है। मेरे एक परिचित हैं, जो हर सुबह कई सौ लोगों को 'गुड मॉर्निंग' भेजते हैं। मैंने पूछा, 'भैया क्या आप इन सबको जानते हैं?' वे बोले, 'नहीं, पर ये सब मेरे फ्रेंड्स हैं।' मैंने सोचा, अगर यही दोस्ती है तो मोहल्ले का किराना दुकानदार मेरा आत्मीय मित्र हुआ। कम से कम वह हर महीने उधार का हिसाब पूछते समय मेरा चेहरा तो पहचान लेता है। इन ऑनलाइन दोस्तों की तरह सिर्फ डी.पी. वाला चेहरा ही नहीं पहचानता। अब आदमी के जीवन में दोस्ती का नए पैमाने, नए मापदंड बन गए हैं-लाइक्स। जिसकी पोस्ट पर ज्यादा लाइक, वह ज्यादा लोकप्रिय। लोग फोटो डालते हैं। कभी कॉफी के कप के साथ, कभी जिम में पसीना बहाते हुए, कभी पहाड़ों में मुस्कुराते हुए और नीचे सैकड़ों लोग लिख देते हैं। 'वाह!' या फिर 'कमाल है!'

हमें तो कभी-कभी लगता है कि अगर न्यूटन आज होते तो वे गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत नहीं खोजते, बल्कि यह खोजते कि पोस्ट पर लाइक किस तरह और किस गति से गिरते हैं? ऑनलाइन दोस्ती की एक और खूबी है। यहां हर आदमी बहुत खुश दिखाई देता है। कोई लिख रहा है, 'लाइफ इज ब्यूटीफुल।' कोई लिख रहा है, 'फीलिंग ब्लेस्ड।' जबकि उसी आदमी की असली जिंदगी में बिजली का बिल, बच्चों की फीस और बॉस की डांट उसकी प्रतीक्षा कर रही होती है। पर इन सब चिंताओं के बीच फुर्सत पाते ही वह एक नई फोटो डाल देता है, मानो हर समस्या हल हो गई। एक दिन हमने अपने मोहल्ले के गुड्डू से यूं ही पूछ लिया, 'भैया तुम्हारे कितने दोस्त हैं?'

'पूरे चार हजार आठ सौ। पांच हजार में दो सौ कम।' उसने बड़े गर्व के साथ मुस्कुराते हुए जवाब दिया। हमने कहा, 'अच्छा है, फिर तो तुम्हें कभी अकेलापन नहीं लगता होगा।''नहीं! नहीं! ऐसा कुछ नहीं। अकेलापन अपनी जगह है। रात को मोबाइल बंद होता है, तो दोस्ती भी 'स्लीप मोड' में चली जाती है। छत की ओर एकटक देखते हुए सोचता हूं, 'इतने सारे दोस्त हैं, पर बात किससे करूं?' उसकी बात सुनकर हम सोचने लगे। इतने दोस्तों के होते हुए भी अकेलापन?' क्योंकि दोस्ती में अब मेहनत नहीं है। मित्रों, दोस्ती का नया ज्ञान और विज्ञान यह है कि डिजिटल की दोस्ती भी बड़ी प्रगतिशील हो गई है। न इंतजार है, न रूठना है, न मनाना है। बस अंगूठा चलाना है। और दोस्त पसंद न आए तो ब्लॉक कर अंगूठा दिखाना है। संवेदनाएं शब्दों की मोहताज हो गईं हैं और भावनाओं ने इमोजी की शक्ल अख्तियार कर ली है। *

लघुकथा / सूर्यदीप कुशवाहा

कच्ची दीवार

अनन्या एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में सीनियर प्रोजेक्ट मैनेजर के पद पर कार्यरत थी। उसकी कार्यक्षमता, अनुशासन और टीम के नेतृत्व करने की काबिलियत का हर कोई कायल था। इस वर्ष ऑपरेशंस हेड का पद खाली होने वाला था और अनन्या अपनी योग्यता के आधार पर इसकी सबसे प्रबल दावेदार थी। उसी विभाग में राहुल भी मैनेजर था। राहुल काम में औसत था, लेकिन उसकी नेटवर्किंग और ऑफिस के पुरुष सहयोगियों के साथ शाम की पार्टियों में उपस्थिति उसे मैनेजमेंट की नजरों में बनाए रखती थी।

पदोन्नति के इंटरव्यू का दिन आया। अनन्या ने पिछले तीन वर्षों के अपने शानदार रिकॉर्ड, कंपनी के बढ़ते हुए प्रॉफिट और टीम की सफलता का पूरा डेटा प्रस्तुत किया। दूसरी ओर, राहुल का प्रस्तुतीकरण सामान्य था। इंटरव्यू बोर्ड के मुख्य सदस्य मिस्टर खन्ना ने अनन्या से एक ऐसा सवाल पूछा, जो शायद ही किसी पुरुष उम्मीदवार से पूछा जाता। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'अनन्या, आपका काम तो बेहतरीन है, लेकिन पता चला है कि आप फैमिली प्लानिंग के बारे में सोच रही हैं। यह पोस्ट तो बहुत जिम्मेदारी वाला है, ऐसे में क्या आप फैमिली के साथ ऑफिस की नई जिम्मेदारियां संभाल पाएंगी?' यह सवाल सुनकर अनन्या सन्न रह गई। उसकी योग्यता पर उसकी व्यक्तिगत जीवन को भारी माना जा रहा था। कुछ दिनों बाद घोषणा की गई कि राहुल को ऑपरेशंस हेड बना दिया गया। कारण बताया गया कि राहुल ज्यादा फ्लेक्सिबल है और जरूरत के समय उपलब्ध रह सकता है। यह अधिकतर कार्यालयों में व्याप्त उस ग्लास सीलिंग का जीवंत उदाहरण था, जहां महिलाओं को उनकी क्षमता के बजाय उनकी सामाजिक भूमिकाओं के तराजू में तौला जाता है। लेकिन अनन्या ने हार नहीं मानी। उसने एचआर विभाग में निष्पक्ष समीक्षा की मांग की और अपनी परफॉर्मेंस के आंकड़ों के साथ औपचारिक शिकायत दर्ज कराई।



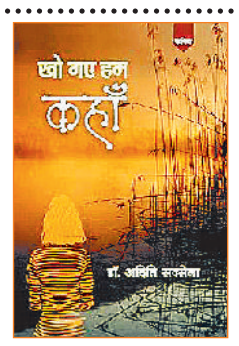
उसने साफ शब्दों में कहा, 'प्रतिबद्धता और काबिलियत का पैमाना जेंडर नहीं, बल्कि रिजल्ट होना चाहिए।' अनन्या के साहस ने दबे स्वर में बात कर रही अन्य महिला सहकर्मियों को भी प्रेरित किया। मामला मुख्यालय तक पहुंचा और जांच में पाया गया कि राहुल का चयन पक्षपातपूर्ण था।

अंततः प्रबंधन को अपनी गलती सुधारनी पड़ी। अनन्या को न केवल वह पद मिला, बल्कि कंपनी ने नई नीतियां लागू कीं ताकि भविष्य में किसी भी महिला की योग्यता को उसके घरेलू भविष्य के अनुमानों से न आंका जाए। अब असमानता की कच्ची दीवार टूट गई थी। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

संवेदना से भरी कविताएं

पेशे से फिजियोथेरेपिस्ट डॉक्टर अदिति सक्सेना के भीतर एक कवि मन भी है। इसको प्रमाणित करता है हाल में छपकर आया उनका पहला कविता संग्रह-खो गए हम कहां। इसमें अपने आस-पास की दुनिया के साथ ही देश और पूरी मनुष्यता के प्रति उनकी संवेदनशीलता प्रकट होती है। इस लिहाज से 'बंटवारा' कविता को पढ़ा जा सकता है। कुछ ऐसे ही भाव 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना' कविता में भी प्रकट हुए



हैं तो कवयित्री को अपने देश के जांबाज सैनिकों पर भी गर्व है। इसे उन्होंने ओजस्वी शब्दों में 'हमारे वीर वायु योद्धा' में व्यक्त किया है। इन सबके साथ पुरुष प्रधान समाज में एक स्त्री को किस तरह हमेशा डरे-सहमे रहने को विवश होना पड़ता है, इस त्रासदी को बहुत मार्मिकता के साथ अदिति ने 'बलात्कार' कविता में शब्दबद्ध किया है। इसी तरह संग्रह की अनेक कविताओं में जीवन और समाज की तमाम विसंगतियों, विडंबनाओं के काव्यात्मक चित्र देखे जा सकते हैं। *

पुस्तक: आ गए हम कहां (कविता संग्रह), **लेखिका:** डॉ. अदिति सक्सेना, **मूल्य:** 350 रुपए, **प्रकाशक:** भावना प्रकाशन, दिल्ली

द्वीपीय जीवन-संस्कृति की झलक दिखाता

अंडमान-निकोबार का कोकोनट कार्निवल



नारियल की खुशबू, समुद्री लहरों की हरहराती आवाज और स्थानीय संस्कृति के विविध रंग, अंडमान और निकोबार द्वीप का कोकोनट कार्निवल इन सबको एक साथ समेटता है। हर वर्ष आयोजित होने वाला यह उत्सव, नारियल के बहाने इन द्वीपों के खान-पान, परंपरा, कला और संस्कृति से भी रूबरू कराता है।

पर्व-संस्कृति
धीरज बसाक

समुद्र के बीच में बसे द्वीपों की अपनी एक अलग भाषा होती है। रास्तों के किनारे झूमते नारियल के पेड़ किसी स्वागत द्वार की तरह लगते हैं और दूर तक फैला नीला पानी यह एहसास करा देता है कि भारत की भौगोलिक कहानी सिर्फ पहाड़ों, मैदानों और रेगिस्तान तक ही सीमित नहीं है। अंडमान-निकोबार पहुंचकर नजर जब नारियल के पेड़ों पर ठहरती है, तो समझ में आता है कि यहां नारियल महज एक फल या पेड़ नहीं बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी, खानपान और स्थानीय अर्थव्यवस्था का हिस्सा भी है। इस रिश्ते को उत्सव में बदल देता है यहां का कोकोनट कार्निवल, जो इस साल 17 से 18 अक्टूबर 2026 को आईटीएफ ग्राउंड, विजय पुरम पोर्ट ब्लेयर में आयोजित होगा।

द्वीपीय जीवनशैली को करीब से देखने का मौका

अंडमान-निकोबार में हर साल अक्टूबर माह में आयोजित होने वाला यह यह पारंपरिक मेला, अपना एक अलग ही चुंबकीय आकर्षण रखता है। इस मौके पर यहां आने वाले पर्यटकों को इन द्वीपों की असली जीवनशैली को करीब से देखने का मौका मिलता है। नारियल से बने खाद्य पदार्थ, स्थानीय उत्पाद, हस्तशिल्प, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां और स्थानीय स्वाद, सब मिलकर इसे सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं बल्कि अंडमान की सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान की झलक बना देते हैं। सैलानियों के लिए किसी जगह की असली खूबसूरती उसके प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों से आगे शुरू होती है। समुद्र तटों की तस्वीरें तो हर पर्यटक खींचता है, लेकिन उन समुद्र तटों के आस-पास रहने वाले लोगों का जीवन कैसा है, वे क्या खाते हैं, क्या बनाते हैं और अपनी प्राकृतिक संपदा को किस तरह देखते हैं? इस सबको जानना यात्रा को एक अनोखा अनुभव बना देता है।

समझ आती है नारियल की बहुपयोगिता



यहां पहुंचकर लोगों को पता चलता है कि नारियल सिर्फ मंदिर में चढ़ाने या कुछ मिठाईयों में इस्तेमाल होने तक सीमित नहीं है। इसकी उपयोगिता की बहुत लंबी-चौड़ी लिस्ट है। इसका पानी हमारी प्यास बुझाता है। इसकी गिरी हमारे भोजन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनती है। इसका तेल खान-पान से लेकर दूसरे घरेलू कामों में इस्तेमाल होता है, जबकि इसकी जटा और खोल से कई तरह के उपयोगी उत्पाद बनाए जाते हैं। द्वीपों में इसकी मौजूदगी इतनी स्वाभाविक है कि पर्यटकों को शायद पहली नजर में इसकी आर्थिक और सांस्कृतिक भूमिका का अंदाजा भी न हो। कोकोनट कार्निवल इसी रोजमर्रा की चीज को उत्सव के केंद्र में लाकर इसके महत्व को उजागर करता है।

अलग-अलग तरह के स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ

इस कार्निवल की एक और खूबी है, यहां पर बनाए जाने वाले विभिन्न व्यंजनों के लजीज स्वाद। अंडमान की यात्रा समुद्री भोजन के स्वाद के बिना अधूरी रहती है। स्थानीय भोजन में कई तरह के समुद्री खाद्य पदार्थों के साथ नारियल की संगति यहां देखते ही बनती है। नारियल आधारित चटनियां, करी और दूसरे स्थानीय व्यंजन यहां आने वाले पर्यटकों को उस स्वाद से परिचय कराते हैं, जो किसी होटल के सामान्य मेन्यू में नहीं मिलता। शाकाहारी यात्रियों के लिए भी यहां नारियल आधारित व्यंजनों की अपनी भरी-पूरी दुनिया है।

संस्कृति के विविध आयामों से परिचय

अंडमान-निकोबार कोकोनट कार्निवल, खान-पान के जरिए भी सैलानियों के सामने स्थानीय संस्कृति परोसता है। यहां की संस्कृति के विविध आयाम हैं, जो सदियों से रह रहे यहां के अनेक समुदायों की परंपराओं से मिलकर बनी है। स्थानीय संगीत और नृत्य, हस्तशिल्प तथा रोजमर्रा के जीवन से जुड़े उत्पाद, इस बात का एहसास कराते हैं कि द्वीपों की संस्कृति मुख्य भूमि से अलग होते हुए भी उसमें भारत की विविधता के चटक रंग घुले हुए हैं।

अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान

इस कोकोनट कार्निवल में आया कोई पर्यटक जब स्थानीय उत्पाद खरीदता है, स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लेता है या स्थानीय कलाकारों की प्रस्तुतियां देखता है, तो इससे यहां की स्थानीय अर्थव्यवस्था को कई तरह से लाभ पहुंचता है। इस तरह उत्सव पर्यटन को केवल होटल्स और दर्शनीय स्थलों तक सीमित रखने की बजाय उसे स्थानीय समुदायों से जोड़ देता है।

हर अनुभव होता है यादगार

सुबह समुद्र के किनारे सूर्योदय, दिन में द्वीपों की सैर और स्थानीय बाजारों की खोज तथा शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अनुभव। कोकोनट कार्निवल के समय यहां आने वाले पर्यटक अपनी आंखों में सिर्फ अंडमान-निकोबार द्वीप की खूबसूरती ही नहीं ले जाते बल्कि इस सांस्कृतिक अनुभव को भी ले जाते हैं, जो जीवन भर उनके मन में यहां की याद ताजा बनाए रखता है। कोकोनट कार्निवल की सबसे खूबसूरत बात यही है कि यह किसी पर्यटन अनुभव की नकल करने की बजाय स्थानीय जीवन के साधारण चीज को उत्सव में बदल देता है। एक नारियल के बहाने, प्रकृति, भोजन, रोजगार, हस्तशिल्प, लोकसंस्कृति और पर्यटन, सब एक ही फ्रेम में दिखाई देने लगते हैं। *

रखें इन बातों का ध्यान

किसी भी द्वीपीय पर्यटन की तरह यहां भी जिम्मेदाराना पर्यटन बहुत जरूरी है। अंडमान-निकोबार के समुद्र तट इसलिए भी लोगों को आकर्षित करते हैं, क्योंकि ये साफ-सुथरे हैं। ऐसे में यह पर्यटकों की जिम्मेदारी भी बनती है कि ये साफ-सुथरे समुद्र तट, बाकी सैलानियों के लिए भी ऐसे ही बने रहें, इसलिए प्लास्टिक कचरा न फैलाना, समुद्री और तटीय पारिस्थितिकी का सम्मान करना, स्थानीय समुदायों और उनकी परंपराओं की तस्वीर या वीडियो लेने से पहले अनुमति लेना, स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता देना जैसी बातों का पालन करें। भले ये छोटी बातें लगती हों, लेकिन संवेदनशील द्वीपों के लिए इनका बड़ा महत्व है।

सफल और समृद्ध जीवन की कामना हम सभी करते हैं। इसे हासिल किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए आपके व्यक्तित्व और व्यवहार में कुछ विशेष गुणों का होना जरूरी है। इस बारे में जानिए।

आपको सफल-समृद्ध बनाएंगी

व्यक्तित्व की खूबियां-आदतें

सक्सेस मंत्र
नेहा जैन



किसी ने क्या खूब कहा है, दौलत तिजोरी या बैंक खाते में आने से पहले सोच में जन्म लेती है। यानी सफल और समृद्ध होने के लिए हमारी सोच और व्यक्तित्व में कुछ आदतों का शामिल होना जरूरी है।

खुद पर भरोसा: हर बड़ी उपलब्धि की शुरुआत तालियों से नहीं होती। कई बार शुरुआत संदेह और उपहास से होती है। असाधारण उपलब्धियां हासिल करने वाले लोगों में अपने विचार और अपनी क्षमता पर एक मजबूत विश्वास दिखाई देता है। इसका मतलब यह नहीं कि वे हर समय सही होते हैं। बल्कि वे गलत होने की संभावना के बावजूद कोशिश करने का साहस रखते हैं। आत्मविश्वास का सही अर्थ है- 'मुझे सब कुछ नहीं आता, लेकिन मैं सीख सकता हूं।' यही सोच नया व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित करती है।

भविष्य का सही अनुमान लगाने की आदत: आम लोग व्यवसाय के लिए देखते या विचार करते हैं कि आज बाजार में क्या चल रहा है? लेकिन असाधारण सोच वाला व्यक्ति सोचता है कि कुछ वर्षों बाद लोग क्या चाहेंगे? बाजार में किस उत्पाद या सेवा की मांग होगी। यही फर्क कई बार विचार और नवाचार के बीच होता है। तकनीक बदल रही हैं, लोगों की आदतें बदल रही हैं, काम करने के तरीके बदल रहे हैं- इन बदलावों को समझकर आगे की तैयारी करना दूरदृष्टि है।



आलोचना से बेपरवाह: जैसे ही आप कुछ नया करेंगे, राय देने वाले लोग मिल जाएंगे। कोई कहेगा, 'यह तुम्हारे बस का नहीं।' कोई कहेगा, 'इसमें पैसा नहीं है।' कोई आपके पुराने अनुभवों का हवाला देकर आपको रोकने की कोशिश करेगा। आलोचना से भागना नहीं चाहिए। लेकिन हर राय को दिल और दिमाग पर नहीं लेना चाहिए। इस विषय में सुलझा हुआ तरीका है सलाह सुनो, उसके तथ्य जांचो, उपयोगी बात अपनाओ और अंतिम निर्णय सोच-समझकर खुद लो।

बेहतर बनने की भूख: असाधारण लोग केवल सफलता पाने की इच्छा नहीं रखते। वे अपने काम में उत्कृष्टता की तलाश करते रहते हैं। यह मानसिकता दूसरों को हराने की तुलना में कहीं अधिक उपयोगी है। यह सूत्र लंबे समय में असाधारण परिणाम दे सकता है।

वर्तमान सुख के बदले बड़ा लक्ष्य: मान लीजिए आपके सामने दो विकल्प हैं अभी दो घंटे मोबाइल पर मनोरंजन या वही दो घंटे किसी जरूरी कौशल को सीखने में लगाना। तुरंत मिलने वाला सुख आकर्षक होगा। लेकिन भविष्य का लाभ अकसर कम दिखाई देता है। इसीलिए आत्म-अनुशासन इतना महत्वपूर्ण है। इसका मतलब जीवन से आनंद खत्म करना नहीं है। इसका अर्थ है यह समझना कि हर इच्छा को तुरंत पूरा करना जरूरी नहीं।

पैसे की बचत जरूरी: सफल-समृद्ध लोग जानते हैं कि धन का अर्थ केवल अधिक कमाना नहीं है। धन को संभालना, बचाना और समझदारी से उपयोग करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। कोई व्यक्ति आय बढ़ा सकता है, लेकिन यदि उसका पूरा पैसा अनियोजित खर्च हो जाए तो आर्थिक सुरक्षा नहीं बनती। यानी पैसे को केवल उपभोग में खत्म करने के बजाय उसे भविष्य के लिए उपयोगी बनाना चाहिए।

जिम्मेदारी स्वीकार करना: जीवन में बहुत कुछ हमारे नियंत्रण से बाहर होता है। बाजार, मौसम, दूसरे लोगों के फैसले और कई परिस्थितियां हमारे हाथ में नहीं होतीं। साथ ही आपको समझना चाहिए कि हर परिस्थिति में कुछ न कुछ ऐसा जरूर होता है, जिस पर हमारा नियंत्रण रहता है जैसे-हमारी तैयारी, हमारा व्यवहार, हमारा अगला कदम। यही जिम्मेदारी की भावना व्यक्ति को निष्क्रिय शिकायत से सक्रिय प्रयास की ओर ले जाती है।

सीमित जोखिम लेना: सफलता की कहानियां अकसर जोखिम से जुड़ी होती हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि सफल व्यक्ति आंख बंद करके जोखिम लेते हैं। समझदारी यह है कि जोखिम और संभावित लाभ दोनों को देखा जाए। किसी नई स्किल को सीखने में समय लग सकता है, लेकिन वह वर्षों तक उपयोगी हो सकती है। कोई नया व्यवसाय शुरू करने से पहले बाजार, पूंजी, मांग और संभावित नुकसान समझना जरूरी है। *

हालांकि पान मूल रूप से भारतीय पौधा नहीं है। लेकिन इसकी पहचान प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति से जुड़ी हुई है। पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक संदर्भों, पूजा-पाठ से लेकर औषधि और सामाजिक प्रतिष्ठा के तौर पर इसका उपयोग किया जाता रहा है।

प्राचीन काल से बरकरार है

भारतीय संस्कृति में पान की शान

संस्कृति
शाहिद ए. चौधरी





पान के पत्ते को लेकर रामकथा में सुंदर प्रसंग का वर्णन मिलता है। भगवान श्रीराम का संदेश लेकर जब हनुमानजी लंका की अशोक वाटिका में पहुंचे तो संदेश पाकर माता सीता अत्यधिक प्रसन्न हो गईं और वह इसके लिए हनुमानजी को कोई उपहार देना चाहती थीं, लेकिन उन्हें आस-पास कोई फूल नहीं मिला। तब उन्होंने पास के एक पौधे से ताजा पत्ते तोड़े और उनको आपस में गूंथकर, आशीर्वाद के साथ हनुमानजी को प्रदान किया। वह पौधा पान का था। चूंकि यह प्रेमाशीष माता सीता से उन्हें मिला था, इसलिए हनुमानजी के लिए पान के पत्ते अति प्रिय हो गए, विशेषकर इसलिए कि यह सम्मान, शुद्धता व नई शुरुआत का प्रतिनिधित्व करते हैं। मान्यता है कि तभी से पूजा के दौरान जब हनुमानजी को पान के पत्ते या उनकी माला को अर्पित किया जाता है, तो वे अति प्रसन्न हो जाते हैं क्योंकि इससे उन्हें माता सीता के आशीष की याद आ जाती है। इससे हनुमानजी भक्त को सुख, अच्छी सेहत के आशीर्वाद के अतिरिक्त उसके समक्ष आने वाली बाधाएं भी दूर कर देते हैं।

प्राचीन ग्रंथों में वर्णन: पान, जिसे तंबुला भी कहते हैं, का उल्लेख प्राचीन संस्कृत, तमिल साहित्य और पांचवीं शताब्दी के कालिदास के लेखन में भी मिलता है। प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों जैसे चरक संहिता में पान की तारीफ करते हुए बताया गया है कि यह पाचन में मदद करता है, श्वास में ताजगी लाता है और शरीर के दोषों को संतुलित करता है। कामसूत्र में कहा गया है कि पान चबाने से पौरुष में वृद्धि होती है। इस पृष्ठभूमि में पान का भारतीय संस्कृति का अटूट हिस्सा बनना स्वाभाविक था और वह भी इस सीमा तक कि प्राचीन व मध्ययुग की हिंदू रियासतों (जैसे कन्नौज) में राजा के हाथों से पान हासिल करना बहुत बड़ा शाही सम्मान माना जाता था। स्वागत व विदाई में पान के पत्तों की संख्या से हैसियत मालूम होती थी- राजा को 32 पान, राजकुमार को 24 पान, ज्ञानी को 12 पान और साधारण व्यक्ति को 4 पान प्रदान किए जाते थे। औपचारिक समारोह में मेजबान दोनों हाथों से पान पेश करता था। दूसरों के सामने पान खाना और उन्हें पेश न करना अभद्रता में शुमार होता था। प्रतिद्वंदी से पान लेने के लिए मजबूर होना अपमान का घूंट पीना था। महिला द्वारा पुरुष को पान देना उसे आमंत्रित करना था।

इतिहास में मिलते हैं संदर्भ: दिलचस्प बात यह है कि पान, भारतीय पौधा नहीं है। यह इंडोनेशिया के द्वीपों व मलय प्रायद्वीप से पानी के व्यापारी जहाजों के जरिए भारत आया। कर्नाटक के बेलूर में चेन्नाकेशव मंदिर (जिसका निर्माण 12वीं शताब्दी में होयसल राजवंश ने कराया था) की बाहरी दीवारों पर एक महिला को पान के पत्ते लिए हुए दर्शाया गया है, जिससे मालूम होता है कि पान को भारत में सदियों पहले स्वीकृति मिली और अब कोई हिंदू समारोह इसके बिना पूर्ण नहीं होता है।

तमिल संगम कविता 2,000 वर्ष पुराने संसार को बयान करती है जो पान से परिचित थी। पातिप्पलाई कविता में पुहार के व्यस्त बाजारों का वर्णन है, जहां पान के पत्ते बेचे जाते थे। मदुरैकांची कविता में पान की खेती व बिक्री का जिक्र मिलता है, जबकि कुसुंटोकाई कविता में बताया गया है कि छाली के साथ पान पेश करना मेजबानी व प्रेम का प्रतीक माना जाता था। असम में मेहमान को सबसे पहले छालियां या सुपारी पेश की जाती थीं। भूटान में जब भी दो लोग मिलते तो 'डोमा ज्हेस' (कृपया पान व छाली लें) कहते।

मुगलकाल में पान का सेवन ललित कला के स्तर तक पहुंच गया। चांदी व सोने के पानदान कुलीन जीवन का आवश्यक अंग बन गए। यूरोपीय यात्रियों जैसे थॉमस रो ने लिखा है कि बादशाह जहांगीर के अपने पानदान से पान मिलना जबरदस्त राजनयिक सम्मान का प्रतीक था। दिल्ली व लखनऊ के नवाबी दौर में पान शेर-ओ-शायरी, संगीत व तवाइफों की तहजीब का हिस्सा बन गए। ब्रिटिशकाल में पान का कुलीन सांस्कृतिक स्टेटस कम होने लगा। ब्रिटिश प्रशासनिक व सेनेटरी दृष्टिकोण के तहत पान को 'गंदी देशज प्रथा' के रूप में देखा जाने लगा। छाली व तंबाकू युक्त पान खाने की आदत को मुंह व गले के कैंसर से जोड़ा जाने लगा। लेकिन इस 'कोलोनियल कलंक' के बावजूद पान खाने का सिलसिला जारी रहा।

बरकरार है रुतबा: आज भी रोजमर्रा के स्ट्रीट फूड के रूप में (देश के लगभग हर शहर में आपको पनवाड़ी की दुकान मिल जाएगी), खाने के बाद हाजमे के लिए और मेहमाननवाजी के तौर पर शादियों, उत्सवों व समारोह में। पहले जहां सिर्फ तीन किस्म के पान खाए जाते थे- मीठा पान (गुलकंद, तिल, नारियल आदि युक्त), सादा पान (सिर्फ कत्था, चुना व छाली सहित) व जर्दा पान (तंबाकू सहित) तो अब चॉकलेट, फ्रूट-फ्लेवर, फायर पान आदि भी आ गए हैं। *

शायरों की नजर में पान का अंदाज



'जब हम-कलाम हम से होता है पान खाकर/किस रंग से करे है बातें चबा-चबाकर।' मीर तकी मीर ने अपने इस शेर में फ्लर्ट करने के रोजमर्रा के पलों का शानदार नक्शा खींचा है, जिसमें प्रेमिका का पान खाना लालित्य व शरारत का माध्यम बन जाता है। पान चबाने से बोलना जानबूझकर धीमा, रंगीन, प्यारा व आकर्षण भरा हो जाता है। प्रेमी न सिर्फ शब्दों से मंत्रमुग्ध हो जाता है बल्कि इस वजह से भी कि हर 'चबाया' हुआ वर्ण शोखी में बदल जाता है। प्रेमिका के इस अंदाज से पान खाने पर मुसहफी गुलाम हमदानी कहते हैं- 'पान खाने की अदा ये है तो इक आलम को/खून रुलाएगी मिरी जान दहन-ए-सुर्ख तिरा।' लेकिन जब प्रेमिका अपने प्रेमी को पान देती है, तो असद अली खान कलक के शब्दों में यह होता है- 'होठों में दाब कर जो गिलौरी दी यार ने/क्या दांत पीसे गैरों ने क्या-क्या चबाए होंठ।' इसी विचार को अकबर इलाहाबादी ने इस तरह से कहा है- 'लगावट की अदा से उनका कहना पान हाजिर है/कयामत है सितम है दिल फिदा है जान हाजिर है।'

शुरुआती दौर से ही हिंदी फिल्मों में भक्ति गीत और भजनों का क्रेज रहा है। इनमें भी मां दुर्गा को समर्पित कई गीत तो बेहद लोकप्रिय हुए और आज भी उनकी लोकप्रियता बरकरार है। यहां कुछ ऐसे ही लोकप्रिय फिल्मी गीतों पर नजर डाल रहे हैं, जिनमें मां दुर्गा की महिमा का वर्णन या उनकी शक्ति का आह्वान किया गया है।

मां दुर्गा की महिमा से दमकते

हिंदी फिल्मों के प्रसिद्ध गीत

सिने ट्रेंड
मनोज प्रकाश



फिल्म 'अवतार' का गीत 'चलो बुलावा आया है..'



फिल्म 'सुहाग' का गीत 'नाम रे सबसे बड़ा तेरा'

धर्म का प्रतिनिधित्व करती हुई जब कोई फिल्म बनती है, तो उसे देखने के नए रिकॉर्ड बनते हैं और जब किसी फिल्म में चमत्कार होता है, तो वह उस फिल्म का हिट पक्ष बन जाता है। यूं तो लगभग हर देवी-देवता की बॉलीवुड फिल्मों में गीतों में स्तुति हुई है लेकिन उनमें से कुछ देवी-देवताओं पर अधिक गीत बनाए गए हैं। मां दुर्गा और उनके विभिन्न स्वरूपों का गुणगान, बॉलीवुड फिल्मों के गीतों में खूब किया जाता रहा है। कुछ फिल्में तो ऐसी हैं, जिनमें शामिल किए गए मां दुर्गा के एक गीत या भजन ने उस फिल्म को भरपूर लोकप्रियता प्रदान की। 'अवतार', 'आशा' और 'सुहाग' जैसी कई फिल्में इसका बेहतरीन उदाहरण हैं।

'अवतार' का 'चलो बुलावा आया है': फिल्म 'अवतार' वर्ष 1983 में जब आई तो इसकी कहानी ने दर्शकों के दिलों को स्पर्श कर लिया। राजेश खन्ना और शबाना आजमी ने इस फिल्म में ऐसे माता-पिता का रोल प्ले किया है, जिन्होंने अपने बच्चों के लिए सब कुछ दांव पर लगा दिया। इसी में जब बच्चा अधिक बीमार होता है, तो दोनों माता वैष्णो देवी के दरबार में जाते हैं और वहां जो चमत्कार होता है, वही इस फिल्म का अहम हिस्सा बन जाता है। फिल्म में नरेंद्र चंचल, महेंद्र कपूर और आशा भोसले द्वारा गाया यह गीत 'चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है', आज भी घरों-मंदिरों में भक्ति-भाव से खूब गाया, सुना और बजाया जाता है। यह मां दुर्गा को समर्पित सबसे लोकप्रिय भक्ति गीतों में से एक है। शारदीय नवरात्र हो या चैत्र नवरात्र माताराणी का यह फिल्मी भजन अवसर को और भी भक्तिमय बना देता है। मां और दुर्गा मां को केंद्र में रखकर बुना गया यह गीत आज भी उतना ही लोकप्रिय है, जितना अपने रिलीज के वक्त हुआ था।



फिल्म 'क्रांतिवीर' का गीत 'जय अंबे जगदंबे मां..'

'आशा' का 'तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए': सन 1980 में आई फिल्म 'आशा', जितेंद्र, रीना राय और रामेश्वरी के अभिनय से सजी थी। इसमें भी नरेंद्र चंचल और मोहम्मद रफी द्वारा गाया भजन 'तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए,' खूब लोकप्रिय हुआ। आज चाहे माता वैष्णों के द्वार पर जाने वाले भक्त हों या फिर दूसरे सिद्धपीठों में मां के दर्शन को जाते भक्त, मार्ग से लेकर मंदिर तक, हर कहीं 'तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए, मैं आया मैं आया शेरा वालिए..' सुनाई पड़ता है। माता रानी के भक्त इसे भक्ति भावना के प्रदर्शन के साथ-साथ अपनी धार्मिक यात्रा की थकान मिटाने के लिए भी गाते हैं।

'सुहाग' का 'नाम रे सबसे बड़ा तेरा नाम': 1979 की फिल्म 'सुहाग' जब आई तो एंग्री यंग मैन का जमाना था। अमिताभ बच्चन, शशि कपूर तथा रेखा की इस फिल्म का गीत- 'हे नाम रे, सबसे बड़ा तेरा नाम, ओ शेरोंवाली, ऊंचे डेरों वाली, बिगड़े बना दे मेरे काम।' मोहम्मद रफी तथा आशा भोसले ने इसमें जो लय दी है, वह ही इसको ऑल टाइम हिट बना गई। मंदिरों से लेकर दुर्गा पंडालों तक में इसकी मधुर आवाज से भक्त रमे रहते हैं। सही बात तो यह है कि चाहे डांडिया हो या गरबा सभी में इसको खूब बजाया जाता है।



'खिलाड़ियों का खिलाड़ी' का गीत 'मां शेरा वालिए'

नवरात्र पर केंद्रित कई अन्य गीत हुए लोकप्रिय: अलग-अलग दौर में आई कई अन्य फिल्मों में भी मां दुर्गा पर केंद्रित गीत रचे गए। इन गीतों ने भी खूब लोकप्रियता बटोरी। आज भी लोगों के दिलों में इन गीतों की खास जगह है। 'हम दिल दे चुके सनम' का 'ढोली तारो ढोल बाजे, ढोल बाजे ढोल बाजे, की धाम धाम बाजे ढोल...' भी डांडिया पंडालों में उतना ही लोकप्रिय है, जितना कि इस फिल्म में था। फिल्म 'क्रांति' का 'दुर्गा है मेरी मां, अंबे है मेरी मां' और 'क्रांतिवीर' का 'जय अंबे जगदंबे मां' भी कम प्रसिद्ध नहीं हुए। 'मर्द' में अनु मलिक तथा शब्बीर कुमार का गाया हुआ गीत 'मां शेरोंवाली' उस समय खूब चला, जब यह मूवी आई थी। 'खिलाड़ियों का खिलाड़ी' का गीत इसी से मिलता हुआ था 'मां शेरा वालिए, तेरा शेर आ गया।' फिल्मों से अलग हटकर देखें तो माता के जगराते में भी यही शक्ति केंद्र में रही। आज तक गैर फिल्मी जो सबसे अधिक पसंदीदा गीत बना वह है 'प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी।' इसे तो लोकगायकों ने भी गाया और फिल्मी गायक-गायिकाओं ने भी। 'अंबे तू है जगदंबे' को तो न जाने कितने गायकों ने गाया है और बॉलीवुड ने इसे कई बार दृश्य को एक नया मोड़ देने के लिए प्रयोग किया।

दर्शकों को खूब लुभाया इन गीतों ने: इस बात में संदेह नहीं कि माता दुर्गा के तमाम रूप हैं जिन्हें बॉलीवुड ने जब तब दर्शकों के सामने अलग-अलग गीतों के रूप में पेश किया। इसके लिए फिल्म की कहानी ऐसी रखी गई जिसमें एक भजननुमा गीत इसमें समाहित किया जा सके। कहानी भी ऐसी जिसे देखकर दर्शकों की आंखें नम हो जाएं। कुछ भजनों को इस तरह से तैयार किया गया कि वह डांडिया या गरबा में भी चलें और दुर्गा जागरण या सामान्य तौर पर भक्तों को भक्ति में रमा दें। कहने का सार यही है कि बॉलीवुड फिल्मों में मां शक्ति के विभिन्न रूपों को समर्पित खूब गीत रचे गए और ऐसे गीत खूब लोकप्रिय भी हुए। *